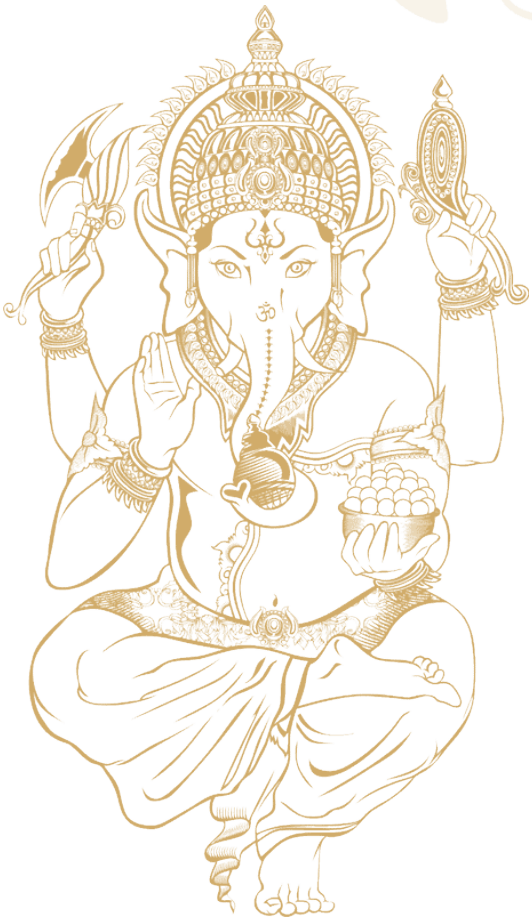

Ms.

Mr.

Model: Web-MatchAnalysisDetailed

Order No: 119216201

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/04/1993	जन्म तिथि	19-20/03/1993
बुधवार	दिन	शुक्र-शनिवार
घंटे 20:16:00	जन्म समय	01:00:00 घंटे
घटी 35:06:56	जन्म समय(घटी)	46:17:26 घटी
India	देश	India
Parli Vaijnath	स्थान	Nizamabad
18:53:00 उत्तर	अक्षांश	18:40:00 उत्तर
76:36:00 पूर्व	रेखांश	78:05:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:36	स्थानिक संस्कार	-00:17:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:13:13	सूर्योदय	06:23:05
18:38:25	सूर्यास्त	18:28:10
23:46:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:01

तुला	लग्न	धनु
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
तुला	राशि	मकर
शुक्र	राशि-स्वामी	शनि
चित्रा	नक्षत्र	धनिष्ठा
मंगल	नक्षत्र स्वामी	मंगल
4	चरण	2
हर्षण	योग	सिद्ध
कौलव	करण	तैतिल
री-रीतेश	जन्म नामाक्षर	गी-गीता
मेष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन
शूद्र	वर्ण	वैश्य
मानव	वश्य	जलचर
व्याघ्र	योनि	सिंह
राक्षस	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	मध्य
मृग	वर्ग	मार्जार

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 0वर्ष 5मा 21दि		17:19:44	तुला	लग्न	धनु	05:47:15	मंगल 4वर्ष 9मा 25दि	
गुरु		24:01:31	मीन	सूर्य	मीन	05:26:20	गुरु	
29/09/2011		05:45:32	तुला	चंद्र	मक	27:29:13	13/01/2016	
29/09/2027		27:12:27	मिथु	मंगल	मिथु	20:26:25	13/01/2032	
गुरु	16/11/2013	26:22:36	कुंभ	बुध व	कुंभ	16:54:26	गुरु	03/03/2018
शनि	29/05/2016	14:59:32	कन्या व	गुरु व	कन्या	17:23:30	शनि	13/09/2020
बुध	04/09/2018	14:23:01	मीन व	शुक्र व	मीन	24:47:58	बुध	20/12/2022
केतु	11/08/2019	03:27:24	कुंभ	शनि	कुंभ	01:35:22	केतु	26/11/2023
शुक्र	11/04/2022	19:51:07	वृश्चि व	राहु व	वृश्चि	21:59:48	शुक्र	27/07/2026
सूर्य	28/01/2023	19:51:07	वृष व	केतु व	वृष	21:59:48	सूर्य	15/05/2027
चन्द्र	29/05/2024	28:16:29	धनु	हर्ष	धनु	27:50:04	चन्द्र	13/09/2028
मंगल	05/05/2025	27:19:13	धनु	नेप	धनु	27:04:01	मंगल	20/08/2029
राहु	29/09/2027	01:19:09	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	01:37:38	राहु	13/01/2032

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:46:03 चित्रपक्षीय अयनांश 23:46:01

लग्न-चलित

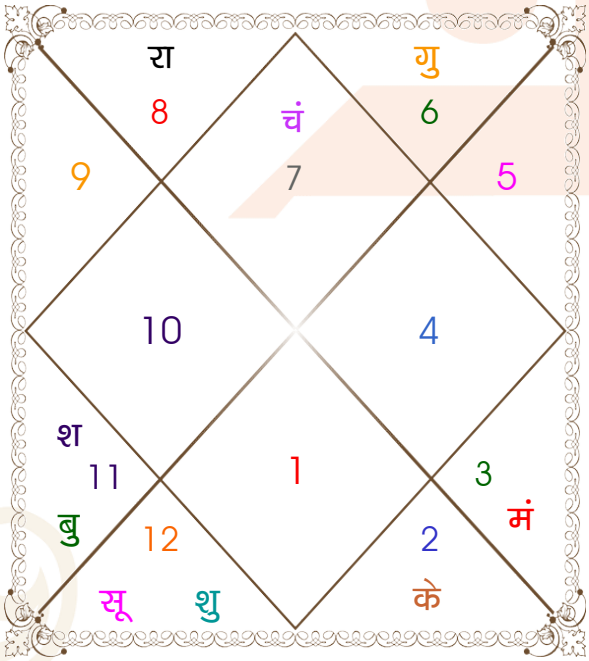

लग्न-चलित

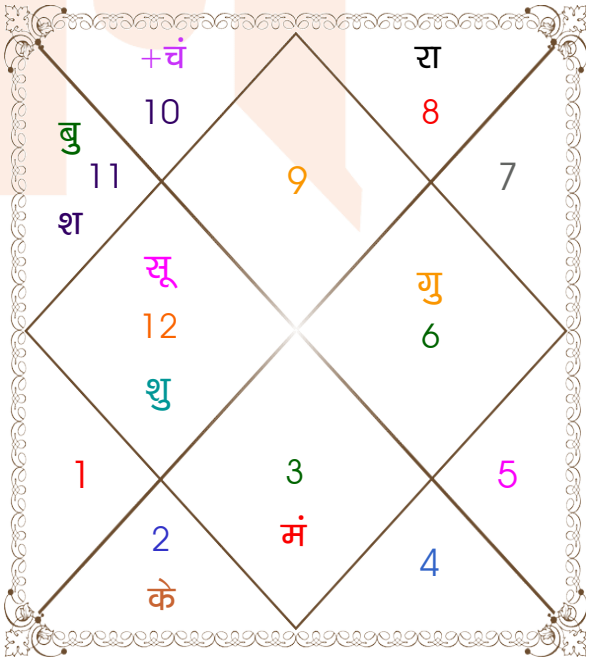

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चन्द्र कुंडली

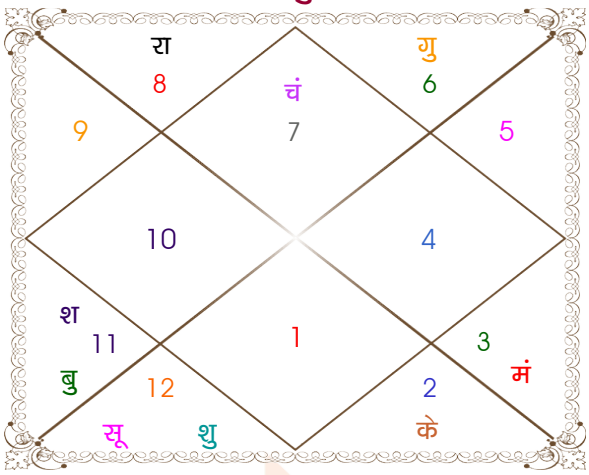

चन्द्र कुंडली

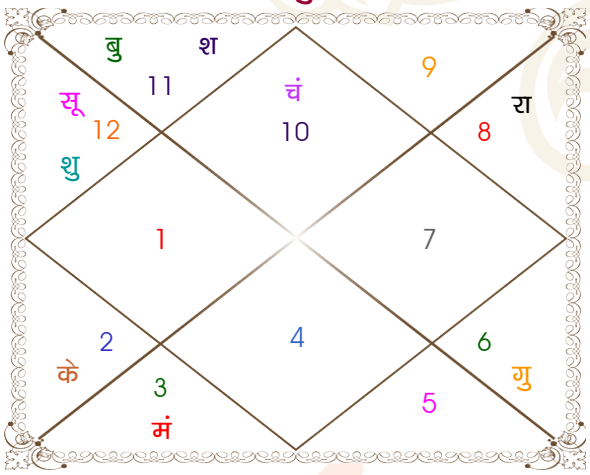

सूर्य कुंडली

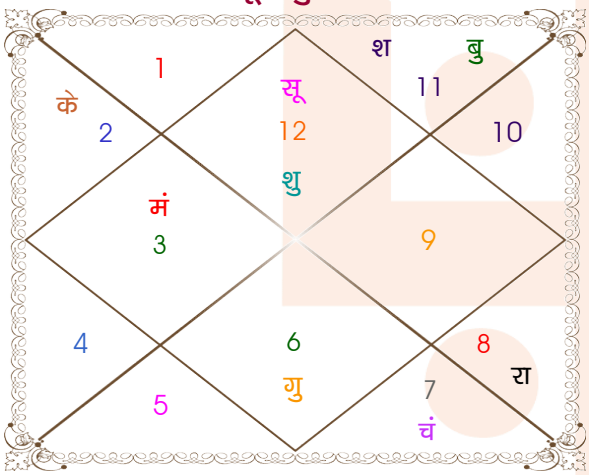

सूर्य कुंडली

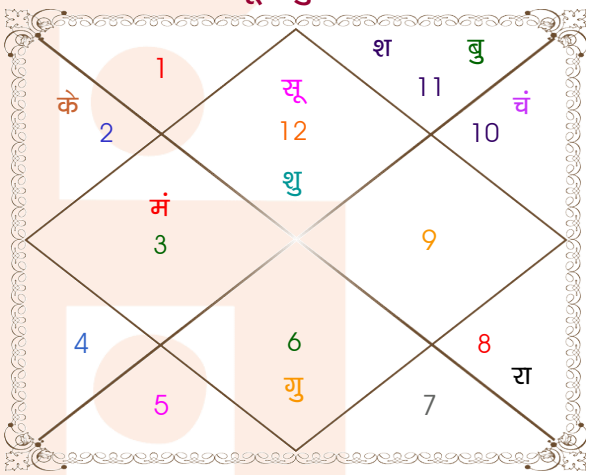

नवमांश कुंडली

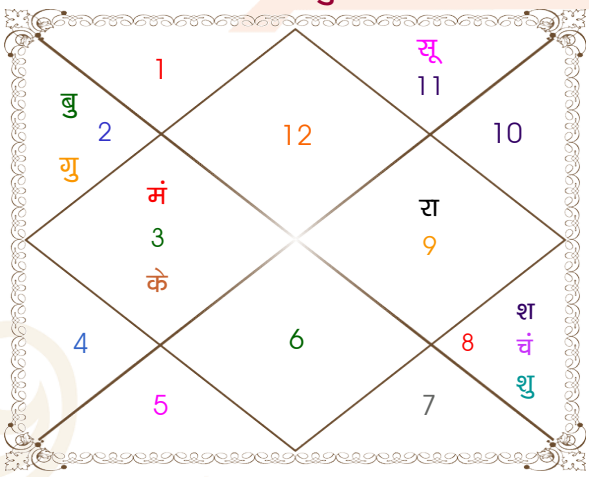

नवमांश कुंडली

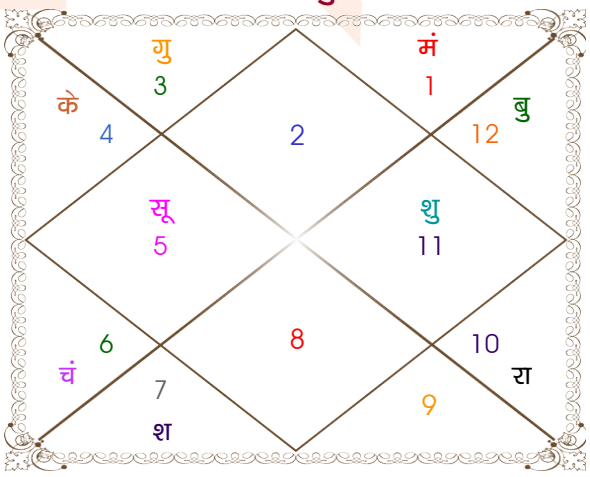

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 5 मास 1 दिन

के.पी. अयनांश : 23:39:33

फॉरच्युना : मेष 29:10:14

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	24:08:00	गुरु	बुध	राहु	राहु
चंद्र		तुला	05:52:01	शुक्र	मंगल	चंद्र	राहु
मंगल		मिथु	27:18:56	बुध	गुरु	शुक्र	मंगल
बुध		कुंभ	26:29:05	शनि	गुरु	केतु	बुध
गुरु	व	कन्या	15:06:01	बुध	चंद्र	गुरु	सूर्य
शुक्र	व	मीन	14:29:30	गुरु	शनि	राहु	शुक्र
शनि		कुंभ	03:33:54	शनि	मंगल	शुक्र	राहु
राहु	व	वृश्चि	19:57:36	मंगल	बुध	शुक्र	चंद्र
केतु	व	वृष	19:57:36	शुक्र	चंद्र	केतु	मंगल
हर्ष		धनु	28:22:59	गुरु	सूर्य	चंद्र	शुक्र
नेप		धनु	27:25:42	गुरु	सूर्य	चंद्र	मंगल
प्लूटो	व	वृश्चि	01:25:38	मंगल	गुरु	राहु	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	17:26:13	शुक्र	राहु	शुक्र	केतु
2	वृश्चि	16:38:59	मंगल	शनि	गुरु	राहु
3	धनु	16:38:03	गुरु	शुक्र	चंद्र	गुरु
4	मक	17:52:01	शनि	चंद्र	बुध	बुध
5	कुंभ	19:46:17	शनि	राहु	मंगल	शुक्र
6	मीन	20:10:51	गुरु	बुध	शुक्र	राहु
7	मेष	17:26:13	मंगल	शुक्र	मंगल	राहु
8	वृष	16:38:59	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
9	मिथु	16:38:03	बुध	राहु	शुक्र	गुरु
10	कर्क	17:52:01	चंद्र	बुध	बुध	राहु
11	सिंह	19:46:17	सूर्य	शुक्र	राहु	सूर्य
12	कन्या	20:10:51	बुध	चंद्र	केतु	गुरु

भाव कुंडली

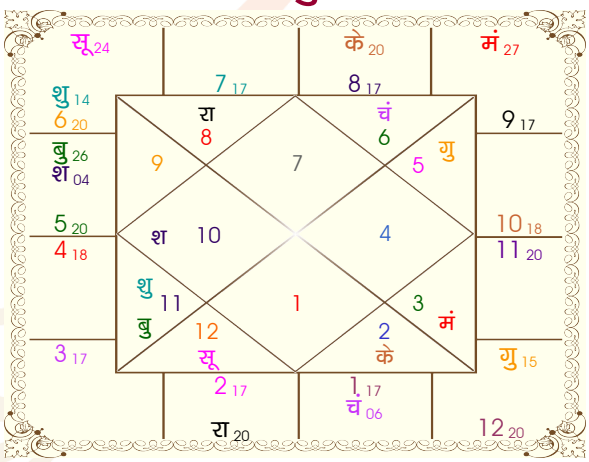

भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 9 मास 4 दिन

के.पी. अयनांश : 23:39:31

फॉरच्युना : तुला 27:56:38

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	05:32:50	गुरु	शनि	बुध	बुध
चंद्र		मक	27:35:43	शनि	मंगल	गुरु	मंगल
मंगल		मिथु	20:32:55	बुध	गुरु	गुरु	बुध
बुध	व	कुंभ	17:00:56	शनि	राहु	शुक्र	बुध
गुरु	व	कन्या	17:30:00	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शुक्र	व	मीन	24:54:29	गुरु	बुध	राहु	शनि
शनि		कुंभ	01:41:53	शनि	मंगल	बुध	शनि
राहु	व	वृश्चि	22:06:19	मंगल	बुध	सूर्य	केतु
केतु	व	वृष	22:06:19	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शनि
हर्ष		धनु	27:56:35	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि
नेप		धनु	27:10:31	गुरु	सूर्य	सूर्य	बुध
प्लूटो	व	वृश्चि	01:44:09	मंगल	गुरु	राहु	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	05:53:45	गुरु	केतु	राहु	गुरु
2	मक	07:21:54	शनि	सूर्य	केतु	राहु
3	कुंभ	11:20:24	शनि	राहु	शनि	शुक्र
4	मीन	14:58:59	गुरु	शनि	गुरु	गुरु
5	मेष	15:00:16	मंगल	शुक्र	शुक्र	शनि
6	वृष	11:13:47	शुक्र	चंद्र	मंगल	राहु
7	मिथु	05:53:45	बुध	मंगल	चंद्र	गुरु
8	कर्क	07:21:54	चंद्र	शनि	केतु	केतु
9	सिंह	11:20:24	सूर्य	केतु	शनि	गुरु
10	कन्या	14:58:59	बुध	चंद्र	गुरु	शुक्र
11	तुला	15:00:16	शुक्र	राहु	केतु	शनि
12	वृश्चि	11:13:47	मंगल	शनि	चंद्र	राहु

भाव कुंडली

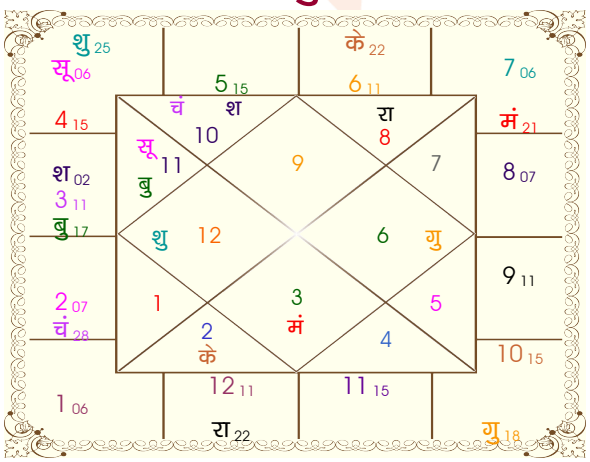

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र-
2	चंद्र- मंगल- शनि- राहु,
3	मंगल- बुध- गुरु-
4	शुक्र+ शनि,
5	सूर्य, बुध, शुक्र+ शनि- राहु,
6	सूर्य, मंगल- बुध- गुरु-
7	चंद्र- मंगल- शनि-
8	शुक्र- केतु,
9	सूर्य- चंद्र, मंगल, बुध- शनि, राहु-
10	चंद्र- गुरु- केतु-
11	सूर्य- मंगल, बुध, गुरु,
12	सूर्य- चंद्र, बुध- गुरु, राहु- केतु,

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- गुरु-
2	सूर्य+ चंद्र, गुरु, शनि, केतु,
3	सूर्य+ बुध, शुक्र, शनि- राहु,
4	मंगल- गुरु- शुक्र,
5	चंद्र- मंगल- शनि-
6	शुक्र- केतु,
7	चंद्र, मंगल, बुध- शुक्र- शनि, राहु-
8	चंद्र- गुरु- केतु-
9	सूर्य-
10	मंगल, बुध- गुरु, शुक्र- राहु-
11	शुक्र-
12	चंद्र- मंगल- बुध, शनि- राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	5, 6, 9- 11- 12-
चंद्र	2- 7- 9, 10- 12,
मंगल	2- 3- 6- 7- 9, 11,
बुध	3- 5, 6- 9- 11, 12-
गुरु	3- 6- 10- 11, 12,
शुक्र	1- 4+ 5+ 8-
शनि	2- 4, 5- 7- 9,
राहु	2, 5, 9- 12-
केतु	8, 10- 12,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2+ 3+ 9-
चंद्र	2, 5- 7, 8- 12-
मंगल	1- 4- 5- 7, 10, 12-
बुध	3, 7- 10- 12,
गुरु	1- 2, 4- 8- 10,
शुक्र	3, 4, 6- 7- 10- 11-
शनि	2, 3- 5- 7, 12-
राहु	3, 7- 10- 12,
केतु	2, 6, 8-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	केतु
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

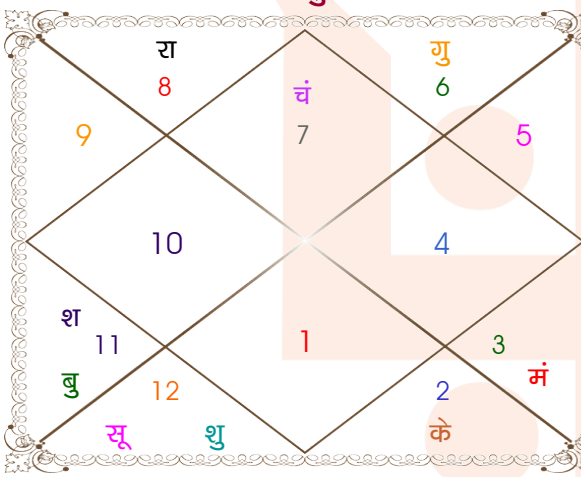

देह विचारः

लग्न कुंडली

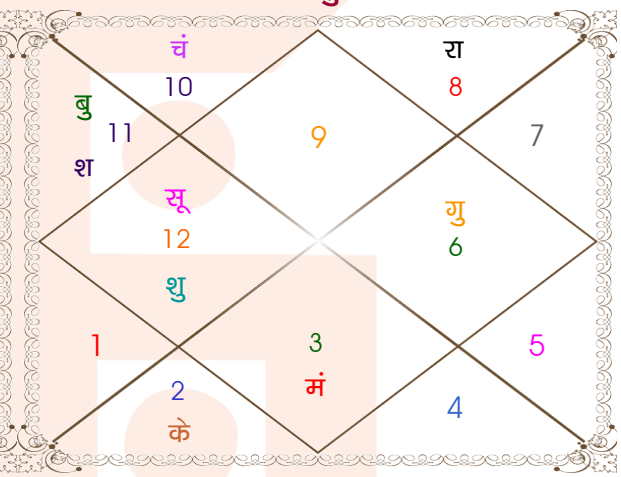

देह विचारः

होरा कुंडली

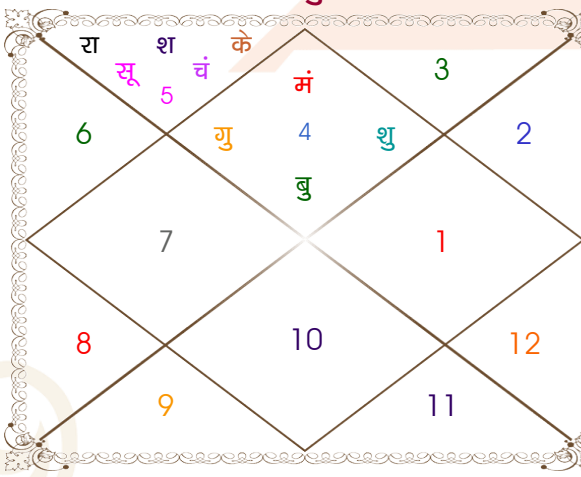

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

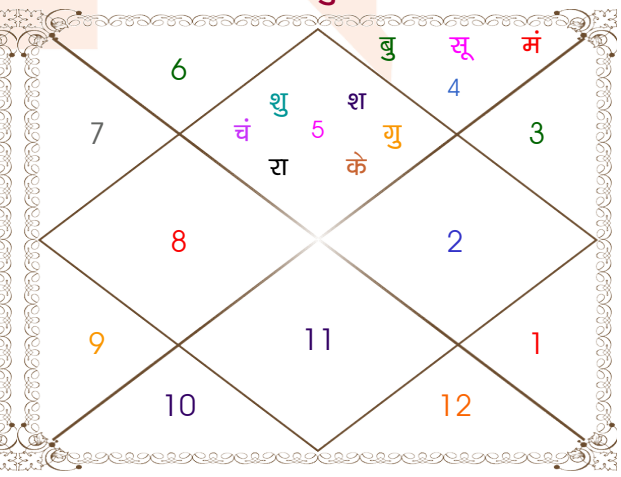

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

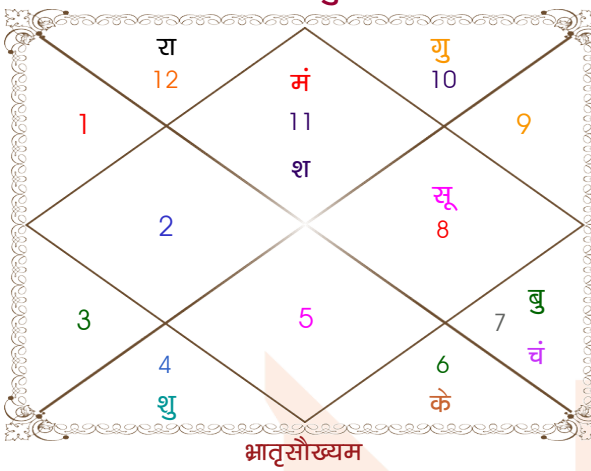

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

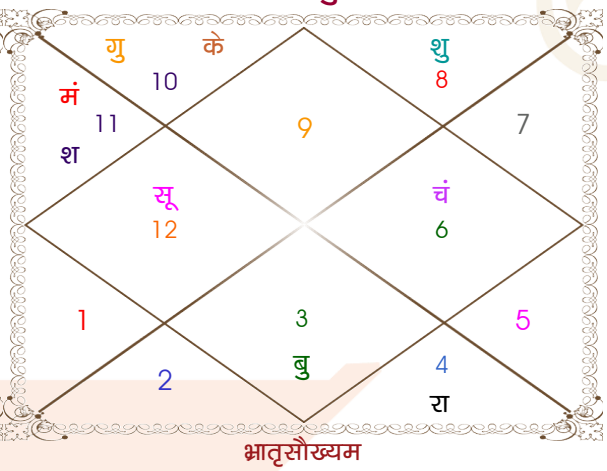

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

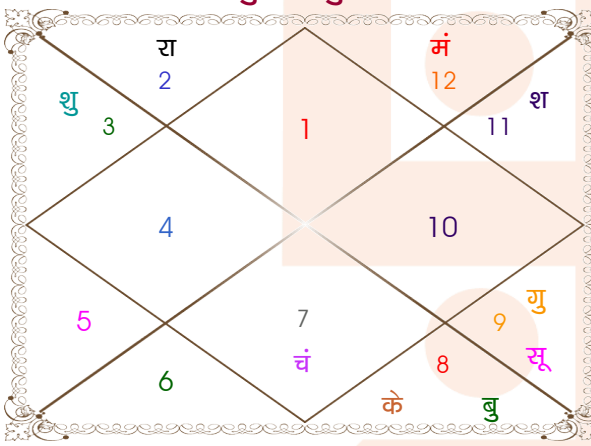

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

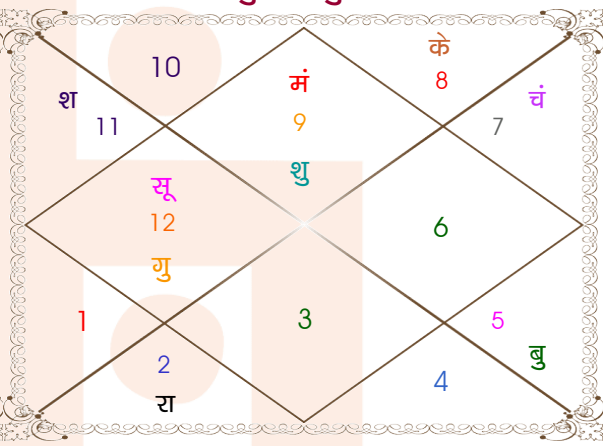

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

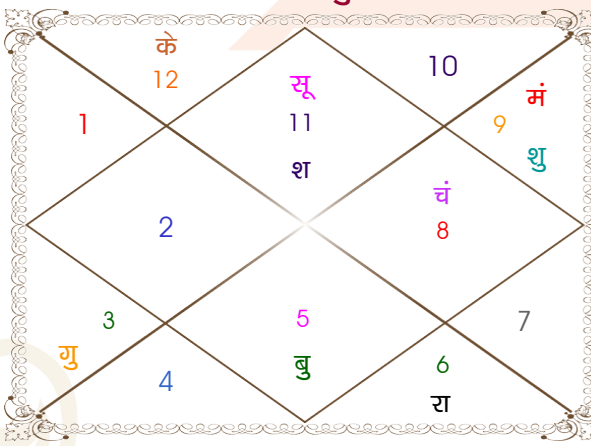

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

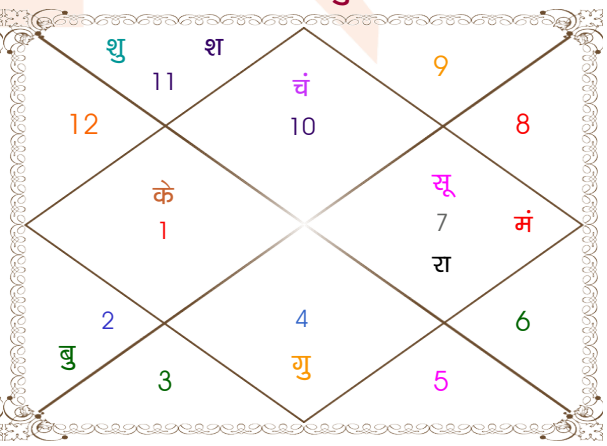

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

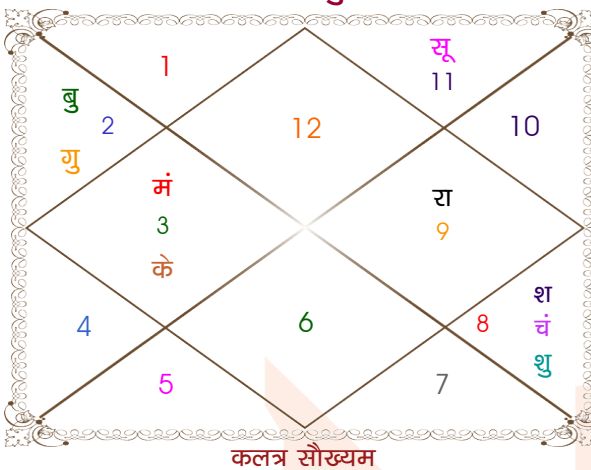

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

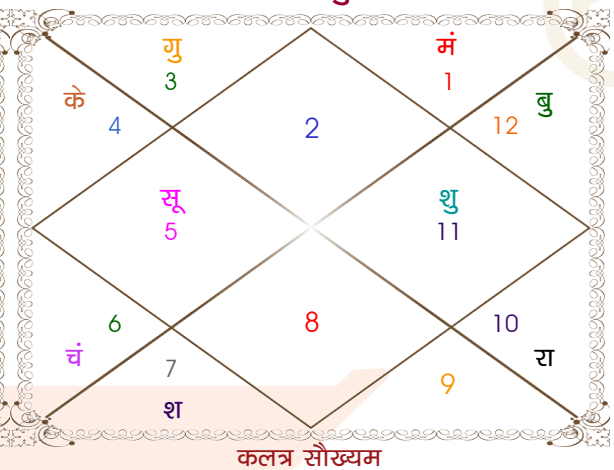

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

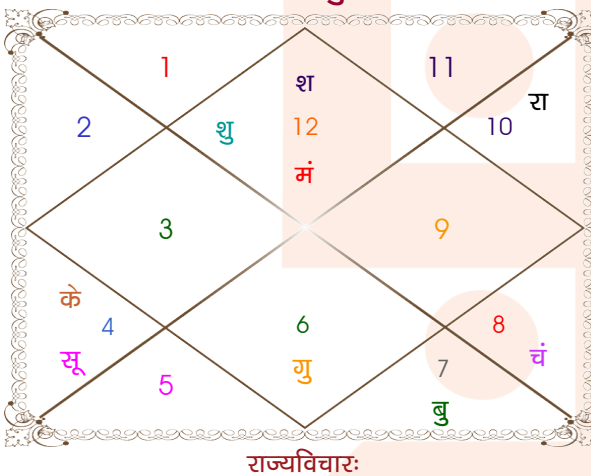

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

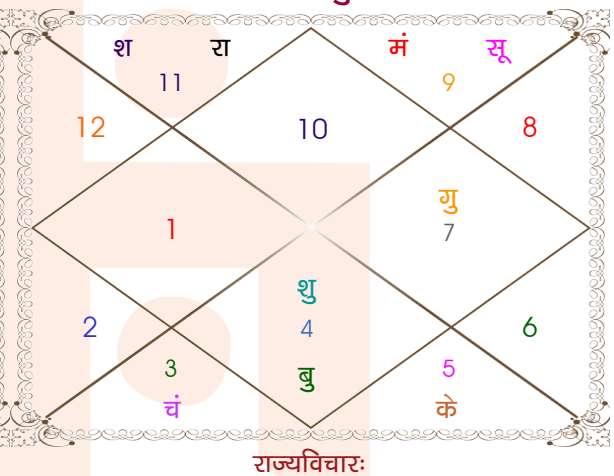

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

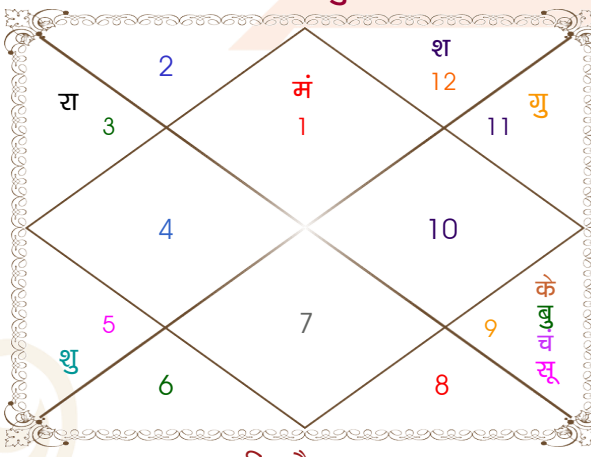

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

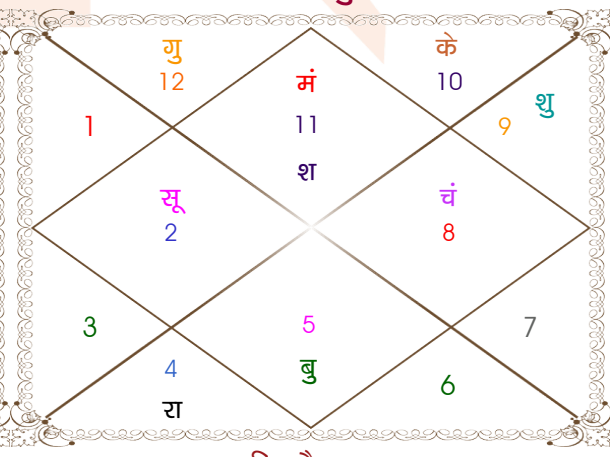

पितृसौख्यम

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

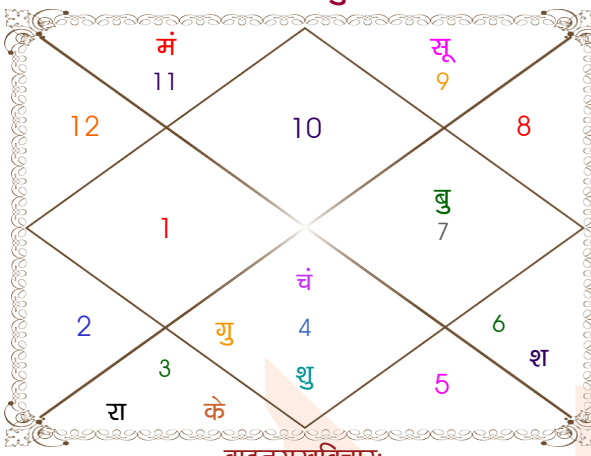

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

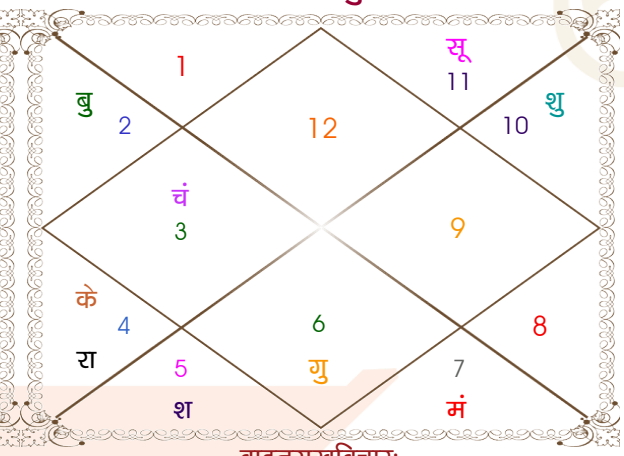

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

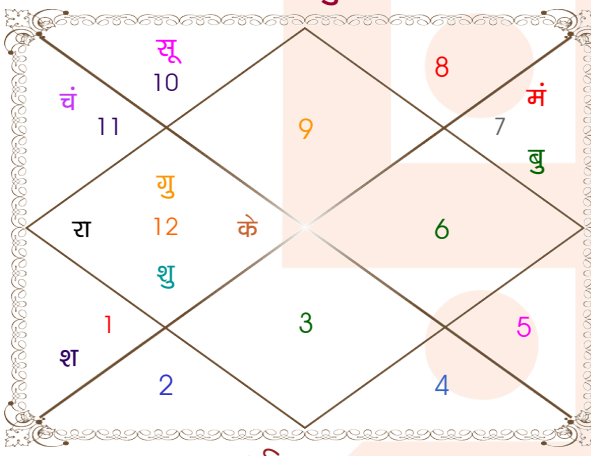

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

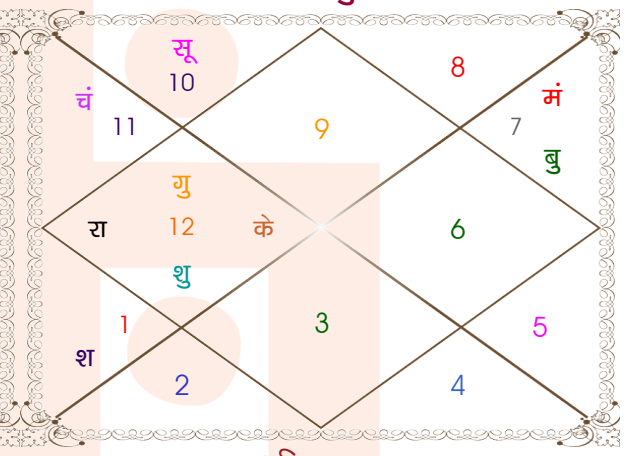

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

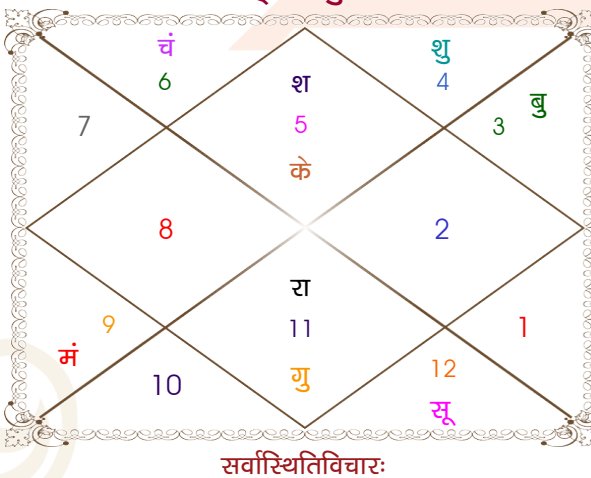

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

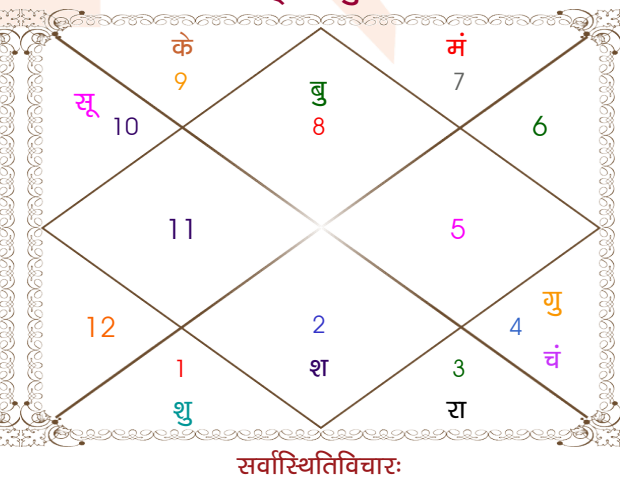

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Ms.

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Mr.

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
कुल	5	3	2	3	5	4	5	3	3	6	5	4	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
कुल	3	3	4	3	2	5	5	5	4	4	5	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	7	2	1	4	5	3	5	6	5	4	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
सूर्य	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	6
चंद्र	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	6
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	7
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
कुल	4	4	5	5	4	5	4	4	5	3	3	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	3	5	6	2	3	1	6	3	3	3	2	2	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	7
कुल	2	3	4	4	4	3	3	2	5	3	4	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
कुल	5	5	4	4	3	7	5	2	4	6	3	6	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
कुल	5	3	4	6	4	3	5	5	4	5	6	4	54

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	3	4	6	5	5	3	5	7	2	7	6	3	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	8
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
कुल	6	4	6	6	2	5	4	5	6	5	2	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
कुल	1	5	6	6	3	3	3	6	5	5	5	4	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
चंद्र	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	9
मंगल	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	9
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
कुल	7	5	4	4	3	2	6	4	5	5	4	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	2	4	3	1	2	4	5	2	4	2	5	5	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
मंगल	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	6
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
कुल	3	2	3	3	3	3	4	3	4	4	3	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	4	6	2	4	6	3	5	4	6	4	3	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	6	5	4	2	3	4	5	4	3	5	5	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

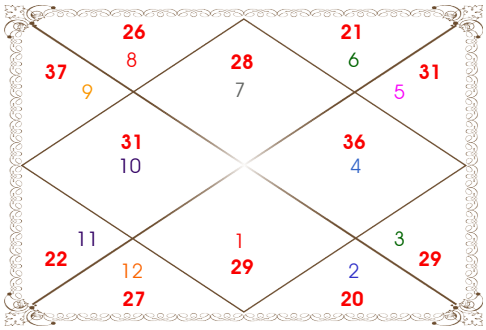

सर्वाष्टकवर्ग

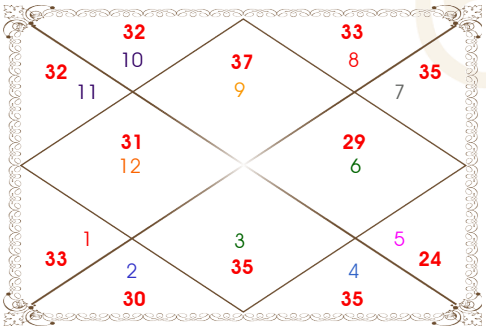

Ms.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	1	2	4	5	2	4	2	5	5	2	4	39
गुरु	7	2	7	6	3	3	4	6	5	5	3	5	56
मंगल	2	2	3	5	6	2	3	1	6	3	3	3	39
सूर्य	3	2	3	5	4	5	3	3	6	5	4	5	48
शुक्र	5	6	6	3	3	3	6	5	5	5	4	1	52
बुध	4	4	3	7	5	2	4	6	3	6	5	5	54
चंद्र	5	3	5	6	5	4	4	3	7	2	1	4	49
बिन्दु	29	20	29	36	31	21	28	26	37	31	22	27	337
रेखा	27	36	27	20	25	35	28	30	19	25	34	29	335

Mr.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	3	6	5	4	2	3	4	5	4	3	5	5	49
सूर्य	3	3	4	3	2	5	5	5	4	4	5	5	48
चंद्र	4	4	5	5	4	5	4	4	5	3	3	3	49
मंगल	2	3	4	4	4	3	3	2	5	3	4	2	39
बुध	5	3	4	6	4	3	5	5	4	5	6	4	54
गुरु	6	4	6	6	2	5	4	5	6	5	2	5	56
शुक्र	7	5	4	4	3	2	6	4	5	5	4	3	52
शनि	3	2	3	3	3	3	4	3	4	4	3	4	39
बिन्दु	33	30	35	35	24	29	35	33	37	32	32	31	386
रेखा	31	34	29	29	40	35	29	31	27	32	32	33	382

शोध्य पिंड - Ms.

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	87	96	103	77	110	106	91
ग्रह पिंड	64	79	24	25	47	26	44
शोध्य पिंड	151	175	127	102	157	132	135

शोध्य पिंड - Mr.

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	70	72	51	74	47	124	86	34
ग्रह पिंड	30	59	36	18	30	47	15	32
शोध्य पिंड	100	131	87	92	77	171	101	66

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

मंगल 0 वर्ष 5 मास 21 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
07/04/1993		28/09/1993		29/09/2011	
28/09/1993		29/09/2011		29/09/2027	
	00/00/0000	राहु	11/06/1996	गुरु	16/11/2013
	00/00/0000	गुरु	04/11/1998	शनि	29/05/2016
	00/00/0000	शनि	10/09/2001	बुध	04/09/2018
	00/00/0000	बुध	30/03/2004	केतु	11/08/2019
	00/00/0000	केतु	17/04/2005	शुक्र	11/04/2022
	00/00/0000	शुक्र	17/04/2008	सूर्य	28/01/2023
	00/00/0000	सूर्य	12/03/2009	चंद्र	29/05/2024
	07/04/1993	चंद्र	10/09/2010	मंगल	05/05/2025
चंद्र	28/09/1993	मंगल	29/09/2011	राहु	29/09/2027

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
29/09/2027		29/09/2046		29/09/2063	
29/09/2046		29/09/2063		29/09/2070	
शनि	02/10/2030	बुध	24/02/2049	केतु	25/02/2064
बुध	11/06/2033	केतु	22/02/2050	शुक्र	26/04/2065
केतु	21/07/2034	शुक्र	22/12/2052	सूर्य	01/09/2065
शुक्र	19/09/2037	सूर्य	29/10/2053	चंद्र	02/04/2066
सूर्य	01/09/2038	चंद्र	30/03/2055	मंगल	29/08/2066
चंद्र	02/04/2040	मंगल	26/03/2056	राहु	17/09/2067
मंगल	11/05/2041	राहु	14/10/2058	गुरु	23/08/2068
राहु	17/03/2044	गुरु	19/01/2061	शनि	01/10/2069
गुरु	29/09/2046	शनि	29/09/2063	बुध	29/09/2070

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
29/09/2070		29/09/2090		28/09/2096	
29/09/2090		28/09/2096		30/09/2106	
शुक्र	28/01/2074	सूर्य	16/01/2091	चंद्र	30/07/2097
सूर्य	28/01/2075	चंद्र	18/07/2091	मंगल	28/02/2098
चंद्र	28/09/2076	मंगल	23/11/2091	राहु	29/08/2099
मंगल	28/11/2077	राहु	16/10/2092	गुरु	29/12/2100
राहु	28/11/2080	गुरु	05/08/2093	शनि	31/07/2102
गुरु	30/07/2083	शनि	18/07/2094	बुध	30/12/2103
शनि	29/09/2086	बुध	24/05/2095	केतु	30/07/2104
बुध	30/07/2089	केतु	29/09/2095	शुक्र	31/03/2106
केतु	29/09/2090	शुक्र	28/09/2096	सूर्य	30/09/2106

मंगल 4 वर्ष 9 मास 25 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
20/03/1993		13/01/1998		13/01/2016	
13/01/1998		13/01/2016		13/01/2032	
	00/00/0000	राहु	25/09/2000	गुरु	03/03/2018
	20/03/1993	गुरु	19/02/2003	शनि	13/09/2020
गुरु	05/06/1993	शनि	26/12/2005	बुध	20/12/2022
शनि	14/07/1994	बुध	14/07/2008	केतु	26/11/2023
बुध	12/07/1995	केतु	01/08/2009	शुक्र	27/07/2026
केतु	08/12/1995	शुक्र	01/08/2012	सूर्य	15/05/2027
शुक्र	06/02/1997	सूर्य	26/06/2013	चंद्र	13/09/2028
सूर्य	14/06/1997	चंद्र	26/12/2014	मंगल	20/08/2029
चंद्र	13/01/1998	मंगल	13/01/2016	राहु	13/01/2032

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
13/01/2032		13/01/2051		13/01/2068	
13/01/2051		13/01/2068		13/01/2075	
शनि	16/01/2035	बुध	11/06/2053	केतु	10/06/2068
बुध	25/09/2037	केतु	08/06/2054	शुक्र	11/08/2069
केतु	04/11/2038	शुक्र	08/04/2057	सूर्य	16/12/2069
शुक्र	04/01/2042	सूर्य	12/02/2058	चंद्र	17/07/2070
सूर्य	17/12/2042	चंद्र	15/07/2059	मंगल	14/12/2070
चंद्र	17/07/2044	मंगल	11/07/2060	राहु	01/01/2072
मंगल	26/08/2045	राहु	28/01/2063	गुरु	07/12/2072
राहु	02/07/2048	गुरु	05/05/2065	शनि	16/01/2074
गुरु	13/01/2051	शनि	13/01/2068	बुध	13/01/2075

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
13/01/2075		13/01/2095		14/01/2101	
13/01/2095		14/01/2101		14/01/2111	
शुक्र	15/05/2078	सूर्य	03/05/2095	चंद्र	14/11/2101
सूर्य	15/05/2079	चंद्र	01/11/2095	मंगल	15/06/2102
चंद्र	13/01/2081	मंगल	08/03/2096	राहु	15/12/2103
मंगल	15/03/2082	राहु	31/01/2097	गुरु	15/04/2105
राहु	14/03/2085	गुरु	19/11/2097	शनि	14/11/2106
गुरु	13/11/2087	शनि	01/11/2098	बुध	15/04/2108
शनि	13/01/2091	बुध	07/09/2099	केतु	14/11/2108
बुध	13/11/2093	केतु	13/01/2100	शुक्र	15/07/2110
केतु	13/01/2095	शुक्र	14/01/2101	सूर्य	14/01/2111

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
05/05/2025		29/09/2027		02/10/2030	
29/09/2027		02/10/2030		11/06/2033	
राहु	14/09/2025	शनि	21/03/2028	बुध	18/02/2031
गुरु	09/01/2026	बुध	24/08/2028	केतु	16/04/2031
शनि	27/05/2026	केतु	27/10/2028	शुक्र	27/09/2031
बुध	29/09/2026	शुक्र	28/04/2029	सूर्य	15/11/2031
केतु	19/11/2026	सूर्य	22/06/2029	चंद्र	05/02/2032
शुक्र	14/04/2027	चंद्र	21/09/2029	मंगल	03/04/2032
सूर्य	28/05/2027	मंगल	24/11/2029	राहु	28/08/2032
चंद्र	09/08/2027	राहु	08/05/2030	गुरु	06/01/2033
मंगल	29/09/2027	गुरु	02/10/2030	शनि	11/06/2033

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
26/11/2023		27/07/2026		15/05/2027	
27/07/2026		15/05/2027		13/09/2028	
शुक्र	06/05/2024	सूर्य	10/08/2026	चंद्र	24/06/2027
सूर्य	24/06/2024	चंद्र	04/09/2026	मंगल	23/07/2027
चंद्र	13/09/2024	मंगल	21/09/2026	राहु	04/10/2027
मंगल	09/11/2024	राहु	03/11/2026	गुरु	08/12/2027
राहु	04/04/2025	गुरु	12/12/2026	शनि	23/02/2028
गुरु	12/08/2025	शनि	28/01/2027	बुध	02/05/2028
शनि	13/01/2026	बुध	10/03/2027	केतु	30/05/2028
बुध	31/05/2026	केतु	27/03/2027	शुक्र	19/08/2028
केतु	27/07/2026	शुक्र	15/05/2027	सूर्य	13/09/2028

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
11/06/2033		21/07/2034		19/09/2037	
21/07/2034		19/09/2037		01/09/2038	
केतु	04/07/2033	शुक्र	29/01/2035	सूर्य	07/10/2037
शुक्र	10/09/2033	सूर्य	28/03/2035	चंद्र	05/11/2037
सूर्य	30/09/2033	चंद्र	03/07/2035	मंगल	25/11/2037
चंद्र	03/11/2033	मंगल	08/09/2035	राहु	16/01/2038
मंगल	27/11/2033	राहु	29/02/2036	गुरु	03/03/2038
राहु	26/01/2034	गुरु	01/08/2036	शनि	27/04/2038
गुरु	21/03/2034	शनि	31/01/2037	बुध	15/06/2038
शनि	24/05/2034	बुध	14/07/2037	केतु	05/07/2038
बुध	21/07/2034	केतु	19/09/2037	शुक्र	01/09/2038

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
13/09/2028		20/08/2029		13/01/2032	
20/08/2029		13/01/2032		16/01/2035	
मंगल	03/10/2028	राहु	29/12/2029	शनि	05/07/2032
राहु	23/11/2028	गुरु	25/04/2030	बुध	08/12/2032
गुरु	07/01/2029	शनि	11/09/2030	केतु	10/02/2033
शनि	02/03/2029	बुध	13/01/2031	शुक्र	12/08/2033
बुध	20/04/2029	केतु	05/03/2031	सूर्य	06/10/2033
केतु	09/05/2029	शुक्र	29/07/2031	चंद्र	06/01/2034
शुक्र	05/07/2029	सूर्य	11/09/2031	मंगल	11/03/2034
सूर्य	22/07/2029	चंद्र	23/11/2031	राहु	23/08/2034
चंद्र	20/08/2029	मंगल	13/01/2032	गुरु	16/01/2035

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
01/09/2038		02/04/2040		11/05/2041	
02/04/2040		11/05/2041		17/03/2044	
चंद्र	19/10/2038	मंगल	25/04/2040	राहु	15/10/2041
मंगल	22/11/2038	राहु	25/06/2040	गुरु	02/03/2042
राहु	17/02/2039	गुरु	18/08/2040	शनि	14/08/2042
गुरु	05/05/2039	शनि	21/10/2040	बुध	09/01/2043
शनि	05/08/2039	बुध	17/12/2040	केतु	10/03/2043
बुध	26/10/2039	केतु	10/01/2041	शुक्र	31/08/2043
केतु	28/11/2039	शुक्र	18/03/2041	सूर्य	22/10/2043
शुक्र	04/03/2040	सूर्य	08/04/2041	चंद्र	17/01/2044
सूर्य	02/04/2040	चंद्र	11/05/2041	मंगल	17/03/2044

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
16/01/2035		25/09/2037		04/11/2038	
25/09/2037		04/11/2038		04/01/2042	
बुध	04/06/2035	केतु	19/10/2037	शुक्र	16/05/2039
केतु	01/08/2035	शुक्र	25/12/2037	सूर्य	13/07/2039
शुक्र	12/01/2036	सूर्य	15/01/2038	चंद्र	17/10/2039
सूर्य	01/03/2036	चंद्र	17/02/2038	मंगल	24/12/2039
चंद्र	22/05/2036	मंगल	13/03/2038	राहु	14/06/2040
मंगल	18/07/2036	राहु	13/05/2038	गुरु	15/11/2040
राहु	12/12/2036	गुरु	06/07/2038	शनि	17/05/2041
गुरु	23/04/2037	शनि	08/09/2038	बुध	28/10/2041
शनि	25/09/2037	बुध	04/11/2038	केतु	04/01/2042

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
17/03/2044		29/09/2046		24/02/2049	
29/09/2046		24/02/2049		22/02/2050	
गुरु	19/07/2044	बुध	31/01/2047	केतु	17/03/2049
शनि	12/12/2044	केतु	24/03/2047	शुक्र	17/05/2049
बुध	22/04/2045	शुक्र	17/08/2047	सूर्य	04/06/2049
केतु	15/06/2045	सूर्य	30/09/2047	चंद्र	04/07/2049
शुक्र	17/11/2045	चंद्र	12/12/2047	मंगल	25/07/2049
सूर्य	02/01/2046	मंगल	02/02/2048	राहु	18/09/2049
चंद्र	20/03/2046	राहु	13/06/2048	गुरु	05/11/2049
मंगल	13/05/2046	गुरु	08/10/2048	शनि	01/01/2050
राहु	29/09/2046	शनि	24/02/2049	बुध	22/02/2050

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
04/01/2042		17/12/2042		17/07/2044	
17/12/2042		17/07/2044		26/08/2045	
सूर्य	21/01/2042	चंद्र	03/02/2043	मंगल	10/08/2044
चंद्र	19/02/2042	मंगल	09/03/2043	राहु	09/10/2044
मंगल	11/03/2042	राहु	03/06/2043	गुरु	02/12/2044
राहु	02/05/2042	गुरु	19/08/2043	शनि	04/02/2045
गुरु	18/06/2042	शनि	19/11/2043	बुध	03/04/2045
शनि	11/08/2042	बुध	09/02/2044	केतु	26/04/2045
बुध	30/09/2042	केतु	14/03/2044	शुक्र	03/07/2045
केतु	20/10/2042	शुक्र	18/06/2044	सूर्य	23/07/2045
शुक्र	17/12/2042	सूर्य	17/07/2044	चंद्र	26/08/2045

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
22/02/2050		22/12/2052		29/10/2053	
22/12/2052		29/10/2053		30/03/2055	
शुक्र	13/08/2050	सूर्य	07/01/2053	चंद्र	11/12/2053
सूर्य	04/10/2050	चंद्र	02/02/2053	मंगल	10/01/2054
चंद्र	29/12/2050	मंगल	20/02/2053	राहु	29/03/2054
मंगल	27/02/2051	राहु	07/04/2053	गुरु	06/06/2054
राहु	02/08/2051	गुरु	19/05/2053	शनि	27/08/2054
गुरु	18/12/2051	शनि	07/07/2053	बुध	08/11/2054
शनि	29/05/2052	बुध	20/08/2053	केतु	08/12/2054
बुध	23/10/2052	केतु	07/09/2053	शुक्र	04/03/2055
केतु	22/12/2052	शुक्र	29/10/2053	सूर्य	30/03/2055

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
26/08/2045		02/07/2048		13/01/2051	
02/07/2048		13/01/2051		11/06/2053	
राहु	29/01/2046	गुरु	02/11/2048	बुध	18/05/2051
गुरु	17/06/2046	शनि	29/03/2049	केतु	08/07/2051
शनि	29/11/2046	बुध	07/08/2049	शुक्र	02/12/2051
बुध	25/04/2047	केतु	30/09/2049	सूर्य	15/01/2052
केतु	25/06/2047	शुक्र	03/03/2050	चंद्र	28/03/2052
शुक्र	15/12/2047	सूर्य	18/04/2050	मंगल	18/05/2052
सूर्य	05/02/2048	चंद्र	04/07/2050	राहु	27/09/2052
चंद्र	02/05/2048	मंगल	27/08/2050	गुरु	22/01/2053
मंगल	02/07/2048	राहु	13/01/2051	शनि	11/06/2053

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
30/03/2055		26/03/2056		14/10/2058	
26/03/2056		14/10/2058		19/01/2061	
मंगल	20/04/2055	राहु	13/08/2056	गुरु	01/02/2059
राहु	14/06/2055	गुरु	15/12/2056	शनि	12/06/2059
गुरु	01/08/2055	शनि	12/05/2057	बुध	08/10/2059
शनि	27/09/2055	बुध	21/09/2057	केतु	25/11/2059
बुध	18/11/2055	केतु	14/11/2057	शुक्र	11/04/2060
केतु	09/12/2055	शुक्र	18/04/2058	सूर्य	22/05/2060
शुक्र	07/02/2056	सूर्य	04/06/2058	चंद्र	30/07/2060
सूर्य	25/02/2056	चंद्र	21/08/2058	मंगल	17/09/2060
चंद्र	26/03/2056	मंगल	14/10/2058	राहु	19/01/2061

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
11/06/2053		08/06/2054		08/04/2057	
08/06/2054		08/04/2057		12/02/2058	
केतु	02/07/2053	शुक्र	27/11/2054	सूर्य	23/04/2057
शुक्र	31/08/2053	सूर्य	18/01/2055	चंद्र	19/05/2057
सूर्य	18/09/2053	चंद्र	14/04/2055	मंगल	06/06/2057
चंद्र	19/10/2053	मंगल	14/06/2055	राहु	23/07/2057
मंगल	09/11/2053	राहु	16/11/2055	गुरु	02/09/2057
राहु	02/01/2054	गुरु	02/04/2056	शनि	21/10/2057
गुरु	19/02/2054	शनि	13/09/2056	बुध	04/12/2057
शनि	18/04/2054	बुध	06/02/2057	केतु	23/12/2057
बुध	08/06/2054	केतु	08/04/2057	शुक्र	12/02/2058

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

मंगला 0 वर्ष 0 मास 24 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
07/04/1993		02/05/1993		03/05/1995	
02/05/1993		03/05/1995		02/05/1998	
	00/00/0000	पिंग	12/06/1993	धांय	02/08/1995
	00/00/0000	धांय	12/08/1993	भ्राम	02/12/1995
	00/00/0000	भ्राम	01/11/1993	भद्रि	02/05/1996
	00/00/0000	भद्रि	10/02/1994	उल्क	01/11/1996
	00/00/0000	उल्क	12/06/1994	सिद्ध	02/06/1997
	00/00/0000	सिद्ध	01/11/1994	संक	31/01/1998
	07/04/1993	संक	12/04/1995	मंग	03/03/1998
संक	02/05/1993	मंग	03/05/1995	पिंग	02/05/1998

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
02/05/1998		02/05/2002		03/05/2007	
02/05/2002		03/05/2007		02/05/2013	
भ्राम	12/10/1998	भद्रि	11/01/2003	उल्क	02/05/2008
भद्रि	03/05/1999	उल्क	11/11/2003	सिद्ध	02/07/2009
उल्क	01/01/2000	सिद्ध	01/11/2004	संक	01/11/2010
सिद्ध	11/10/2000	संक	11/12/2005	मंग	01/01/2011
संक	01/09/2001	मंग	31/01/2006	पिंग	03/05/2011
मंग	12/10/2001	पिंग	13/05/2006	धांय	01/11/2011
पिंग	01/01/2002	धांय	12/10/2006	भ्राम	02/07/2012
धांय	02/05/2002	भ्राम	03/05/2007	भद्रि	02/05/2013

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
02/05/2013		02/05/2020		02/05/2028	
02/05/2020		02/05/2028		02/05/2029	
सिद्ध	11/09/2014	संक	10/02/2022	मंग	12/05/2028
संक	02/04/2016	मंग	02/05/2022	पिंग	01/06/2028
मंग	12/06/2016	पिंग	12/10/2022	धांय	02/07/2028
पिंग	01/11/2016	धांय	12/06/2023	भ्राम	11/08/2028
धांय	02/06/2017	भ्राम	02/05/2024	भद्रि	01/10/2028
भ्राम	13/03/2018	भद्रि	12/06/2025	उल्क	01/12/2028
भद्रि	03/03/2019	उल्क	12/10/2026	सिद्ध	10/02/2029
उल्क	02/05/2020	सिद्ध	02/05/2028	संक	02/05/2029

पिंगला 1 वर्ष 4 मास 15 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
20/03/1993		04/08/1994		04/08/1997	
04/08/1994		04/08/1997		04/08/2001	
	00/00/0000	धांय	04/11/1994	भ्राम	14/01/1998
	00/00/0000	भ्राम	06/03/1995	भद्रि	04/08/1998
	20/03/1993	भद्रि	05/08/1995	उल्क	05/04/1999
भद्रि	15/05/1993	उल्क	03/02/1996	सिद्ध	14/01/2000
उल्क	14/09/1993	सिद्ध	03/09/1996	संक	04/12/2000
सिद्ध	03/02/1994	संक	05/05/1997	मंग	13/01/2001
संक	15/07/1994	मंग	04/06/1997	पिंग	04/04/2001
मंग	04/08/1994	पिंग	04/08/1997	धांय	04/08/2001

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
04/08/2001		04/08/2006		04/08/2012	
04/08/2006		04/08/2012		05/08/2019	
भद्रि	15/04/2002	उल्क	05/08/2007	सिद्ध	14/12/2013
उल्क	13/02/2003	सिद्ध	04/10/2008	संक	05/07/2015
सिद्ध	03/02/2004	संक	03/02/2010	मंग	14/09/2015
संक	15/03/2005	मंग	05/04/2010	पिंग	03/02/2016
मंग	05/05/2005	पिंग	04/08/2010	धांय	03/09/2016
पिंग	14/08/2005	धांय	03/02/2011	भ्राम	14/06/2017
धांय	14/01/2006	भ्राम	05/10/2011	भद्रि	05/06/2018
भ्राम	04/08/2006	भद्रि	04/08/2012	उल्क	05/08/2019

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
05/08/2019		05/08/2027		04/08/2028	
05/08/2027		04/08/2028		04/08/2030	
संक	15/05/2021	मंग	15/08/2027	पिंग	14/09/2028
मंग	04/08/2021	पिंग	04/09/2027	धांय	13/11/2028
पिंग	14/01/2022	धांय	05/10/2027	भ्राम	03/02/2029
धांय	14/09/2022	भ्राम	14/11/2027	भद्रि	15/05/2029
भ्राम	05/08/2023	भद्रि	04/01/2028	उल्क	14/09/2029
भद्रि	14/09/2024	उल्क	05/03/2028	सिद्ध	03/02/2030
उल्क	14/01/2026	सिद्ध	15/05/2028	संक	15/07/2030
सिद्ध	05/08/2027	संक	04/08/2028	मंग	04/08/2030

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

मंगला 0 वर्ष 0 मास 24 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
02/05/2029		03/05/2031		02/05/2034	
03/05/2031		02/05/2034		02/05/2038	
पिंग	12/06/2029	धांय	02/08/2031	भ्राम	12/10/2034
धांय	12/08/2029	भ्राम	02/12/2031	भद्रि	03/05/2035
भ्राम	01/11/2029	भद्रि	02/05/2032	उल्क	01/01/2036
भद्रि	10/02/2030	उल्क	01/11/2032	सिद्ध	11/10/2036
उल्क	12/06/2030	सिद्ध	02/06/2033	संक	01/09/2037
सिद्ध	01/11/2030	संक	31/01/2034	मंग	12/10/2037
संक	12/04/2031	मंग	03/03/2034	पिंग	01/01/2038
मंग	03/05/2031	पिंग	02/05/2034	धांय	02/05/2038

पिंगला 1 वर्ष 4 मास 15 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
04/08/2030		04/08/2033		04/08/2037	
04/08/2033		04/08/2037		04/08/2042	
धांय	04/11/2030	भ्राम	14/01/2034	भद्रि	15/04/2038
भ्राम	06/03/2031	भद्रि	04/08/2034	उल्क	13/02/2039
भद्रि	05/08/2031	उल्क	05/04/2035	सिद्ध	03/02/2040
उल्क	03/02/2032	सिद्ध	14/01/2036	संक	15/03/2041
सिद्ध	03/09/2032	संक	04/12/2036	मंग	05/05/2041
संक	05/05/2033	मंग	13/01/2037	पिंग	14/08/2041
मंग	04/06/2033	पिंग	04/04/2037	धांय	14/01/2042
पिंग	04/08/2033	धांय	04/08/2037	भ्राम	04/08/2042

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
02/05/2038		03/05/2043		02/05/2049	
03/05/2043		02/05/2049		02/05/2056	
भद्रि	11/01/2039	उल्क	02/05/2044	सिद्ध	11/09/2050
उल्क	11/11/2039	सिद्ध	02/07/2045	संक	02/04/2052
सिद्ध	01/11/2040	संक	01/11/2046	मंग	12/06/2052
संक	11/12/2041	मंग	01/01/2047	पिंग	01/11/2052
मंग	31/01/2042	पिंग	03/05/2047	धांय	02/06/2053
पिंग	13/05/2042	धांय	01/11/2047	भ्राम	13/03/2054
धांय	12/10/2042	भ्राम	02/07/2048	भद्रि	03/03/2055
भ्राम	03/05/2043	भद्रि	02/05/2049	उल्क	02/05/2056

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
04/08/2042		04/08/2048		05/08/2055	
04/08/2048		05/08/2055		05/08/2063	
उल्क	05/08/2043	सिद्ध	14/12/2049	संक	15/05/2057
सिद्ध	04/10/2044	संक	05/07/2051	मंग	04/08/2057
संक	03/02/2046	मंग	14/09/2051	पिंग	14/01/2058
मंग	05/04/2046	पिंग	03/02/2052	धांय	14/09/2058
पिंग	04/08/2046	धांय	03/09/2052	भ्राम	05/08/2059
धांय	03/02/2047	भ्राम	14/06/2053	भद्रि	14/09/2060
भ्राम	05/10/2047	भद्रि	05/06/2054	उल्क	14/01/2062
भद्रि	04/08/2048	उल्क	05/08/2055	सिद्ध	05/08/2063

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
02/05/2056		02/05/2064		02/05/2065	
02/05/2064		02/05/2065		03/05/2067	
संक	10/02/2058	मंग	12/05/2064	पिंग	12/06/2065
मंग	02/05/2058	पिंग	01/06/2064	धांय	12/08/2065
पिंग	12/10/2058	धांय	02/07/2064	भ्राम	01/11/2065
धांय	12/06/2059	भ्राम	11/08/2064	भद्रि	10/02/2066
भ्राम	02/05/2060	भद्रि	01/10/2064	उल्क	12/06/2066
भद्रि	12/06/2061	उल्क	01/12/2064	सिद्ध	01/11/2066
उल्क	12/10/2062	सिद्ध	10/02/2065	संक	12/04/2067
सिद्ध	02/05/2064	संक	02/05/2065	मंग	03/05/2067

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
05/08/2063		04/08/2064		04/08/2066	
04/08/2064		04/08/2066		04/08/2069	
मंग	15/08/2063	पिंग	14/09/2064	धांय	04/11/2066
पिंग	04/09/2063	धांय	13/11/2064	भ्राम	06/03/2067
धांय	05/10/2063	भ्राम	03/02/2065	भद्रि	05/08/2067
भ्राम	14/11/2063	भद्रि	15/05/2065	उल्क	03/02/2068
भद्रि	04/01/2064	उल्क	14/09/2065	सिद्ध	03/09/2068
उल्क	05/03/2064	सिद्ध	03/02/2066	संक	05/05/2069
सिद्ध	15/05/2064	संक	15/07/2066	मंग	04/06/2069
संक	04/08/2064	मंग	04/08/2066	पिंग	04/08/2069

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

7	मूलांक	2
6	भाग्यांक	9
2, 3, 6, 7	मित्र अंक	2, 7, 8, 9
4, 5, 8	शत्रु अंक	4, 5, 6
25,34,43,52,61	शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मकर, मिथुन	मित्र राशि	कन्या, तुला
मकर, मिथुन, सिंह	मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
लक्ष्मी	अनुकूल देवता	नृसिंह
हीरा	शुभ रत्न	पुखराज
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
पन्ना	भाग्य रत्न	माणिक्य
रजत	शुभ धातु	कांसा
रजत	शुभ रंग	पीत
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
सूर्योदय	शुभ समय	संध्या
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
चावल	दान अन्न	दाल चना
दूध	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Ms.

जीवन रत्नः	हीरा	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पन्ना	सन्तति सुख, भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	नीलम	सन्तति सुख, सुख
शुभ उपरत्नः	मोती	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति

Mr.

जीवन रत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	माणिक्य	सुख, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	दम्पति, सन्तति सुख, कम खर्च

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	--- --
साढेसाती तृतीय ढैया	19/03/1993-10/08/1995
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/04/1998-05/06/2000
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती तृतीय ढैया	21/07/2022-24/03/2025
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती तृतीय ढैया	17/02/2052-09/09/2054
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बदनामी

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Ms.

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Mr.

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	सिंह	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.00		

कुल : **24 / 36**

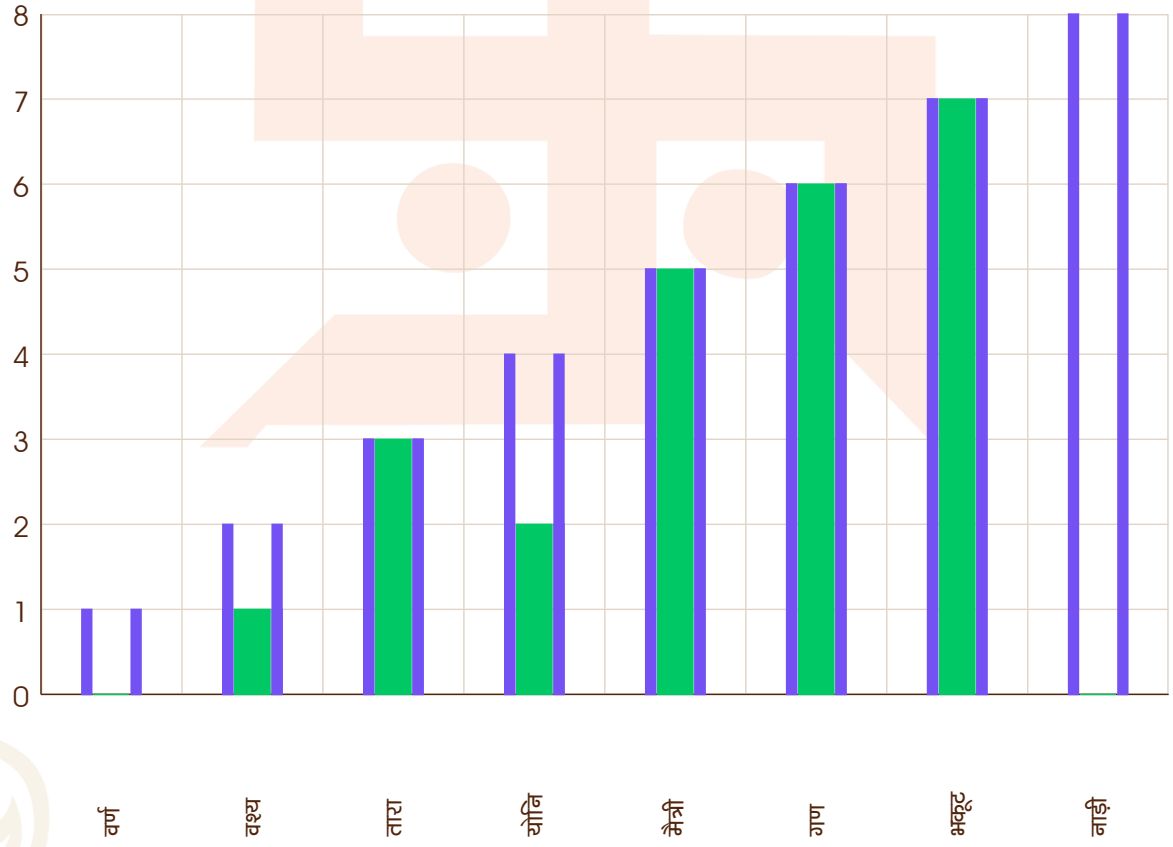

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

Ms. का वर्ग मृग है तथा Mr. का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Ms. और Mr. का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

Ms. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

Ms. तथा Mr. में मंगलीक मिलान ठीक नही है।

निष्कर्ष

मंगलीक दोष के कारण मिलान ठीक नहीं हैं।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Ms. का वर्ण शूद्र है तथा Mr. का वर्ण वैश्य है। क्योंकि Mr. का वर्ण Ms. के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। Mr. अति स्वार्थी तथा धन-लोलुप होगी। वह हमेशा दूसरों की कीमत पर सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति करती रहेगी। यह Mr. अपने पति, बच्चों तथा परिवार के लोगों की न तो चिन्ता करेगी और न ही देखभाल। लड़ाई-झगड़ा करके यह हमेशा घर के लोगों का जीना दूभर कर सकती है।

वश्य

Ms. का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Mr. का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें Ms. एवं Mr. दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः Ms. Mr. पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि Ms. हमेश Mr. के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

Ms. की तारा जन्म तथा Mr. की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

Ms. की योनि व्याघ्र है तथा Mr. की योनि सिंह है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है।

इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Ms. एवं Mr. दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Ms. एवं Mr. के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण Ms. एवं Mr. जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

Ms. का गण राक्षस है तथा Mr. का गण भी राक्षस है। अर्थात Mr. का गण Ms. के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण Ms. एवं Mr. दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श साबित होंगे।

भकूट

Ms. से Mr. की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है तथा Mr. से Ms. की राशि दशम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण Ms. परिश्रमी एवं अपने व्यवसाय में काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय में लगन, निष्ठा एवं मेहनत के कारण उन्हें सभी से प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर Mr. घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवं सब का ध्यान रखने तथा बड़ों को सम्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के सदस्यों की आंखों का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, सहयोग एवं सामंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

Ms. की नाड़ी मध्य है तथा Mr. की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं

है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में Ms. एवं Mr. का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

Ms. की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला तथा Mr. की राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर राशि है। अतः इसके प्रभाव से Ms. एवं Mr. का दाम्पत्य जीवन में सामान्यतया मतभेद रहेगा तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहने के लिए यत्नशील रहेंगे। अतः मिलान सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा।

Ms. की राशि का स्वामी शुक्र तथा Mr. की जन्म राशि का स्वामी शनि परस्पर मित्र राशियों में पड़ते हैं। अतः सुखी वैवाहिक जीवन के लिए यह स्थिति शुभ रहेगी। इसके प्रभाव से Ms. और Mr. के मध्य सहयोग सदभाव तथा समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। वे एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे फलतः परस्पर संबधों में मधुरता बनी रहेगी।

Ms. और Mr. की राशियां परस्पर चतुर्थ तथा दशम में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से दाम्पत्य जीवन में सुख शांति रहेगी तथा Ms. और Mr. सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ होंगे। वे एक दूसरे की स्वतंत्रता तथा अस्तित्व का पूर्ण सम्मान करेंगे जिससे आपस में समानता एवं सदभाव का व्यवहार रहेगा तथा समय सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Ms. का वश्य मानव तथा Mr. का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में स्वाभाविक शत्रुता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में असमानता होगी। साथ ही शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं अलग अलग होंगी जिससे काम संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

Ms. का वर्ण शूद्र तथा Mr. का वर्ण वैश्य है। अतः Ms. किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा Mr. की प्रवृति धनार्जन के प्रति अधिक रहेगी तथा वणिक बुद्धि से अपने कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी।

धन

Ms. और Mr. का जन्म एक ही तारा 'जनम' में हुआ है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट एवं मंगल का प्रभाव भी आर्थिक स्थिति पर सामान्य ही रहेगा। अतः अपने वर्तमान स्रोतों से परिश्रम पूर्वक धनऐश्वर्य की प्राप्ति होती रहेगी जिससे लाभ मार्ग सामान्यतया प्रश्स्त होंगे तथा आर्थिक स्थिति से Ms. और Mr. सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

Ms. को पैतृक सम्पति तथा जायदाद की प्राप्ति होगी। अतः आजीवन वे धन धान्य से युक्त रहेंगे तथा अपनी प्रतिभा, योग्यता एवं परिश्रम से उसमें उतरोत्तर वृद्धि करने में समर्थ होंगे । इस प्रकार भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते हुए वे अपना समय आनंद पूर्वक

व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

Ms. और Mr. दोनों मध्य नाड़ी में उत्पन्न हुए है अतः नाड़ी दोष से ये प्रभावित होंगे। इसके प्रभाव से इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर शारीरिक दुर्बलता का आभास होगा। साथ ही Ms. के लिए मंगल भी अशुभ रहेगा जिससे वे रक्त या पित संबधी कष्ट प्राप्त करेंगे तथा हृदय संबधी परेशानी भी होगी इसके अतिरिक्त धातु या गुप्त रोगों की संभावना भी हो सकती है। इससे परस्पर संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा अतः मिलान के लिए यत्नपूर्वक इनकी उपेक्षा करनी चाहिए। तथापि शुभ फलों की प्राप्ति के लिए Ms. को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा तथा मंगलवार का उपवास करना श्रेष्ठ सिद्ध हो सकता है।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Ms. और Mr. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Ms. और Mr. के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Mr. के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Mr. को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Mr. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Ms. और Mr. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Ms. और Mr. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Mr. के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। Mr. भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा Mr. भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर

दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का Mr. को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

Ms. के सास के साथ सामान्यतया अच्छे ही संबध रहेंगे तथा उनके प्रति इनके मन में सम्मान तथा आदर का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। सास को वह माता के समान समझेंगे तथा वह भी उन्हें पुत्रवत स्नेह तथा सहयोग प्रदान करेंगी । साथ ही Ms. भी समय समय पर ससुराल में आते जाते रहेंगे तथा आपस में श्रेष्ठता के भाव की हमेशा न्यूनता रहेगी।

लेकिन ससुर के साथ में सामान्यतया संबधों में तनाव रहेगा तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण वैचारिक मतभेद भी रहेंगे परन्तु यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति का अनुपालन करें तो संबधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भी Ms. के संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर स्नेह एवं सहयोग के भाव की न्यूनता रहेगी एवं प्रतिद्वन्दिता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण Ms. के प्रति विशेष उल्लेखनीय नहीं रहेगा।

अंक ज्योतिष फल

Ms.

आपका जन्म दिनांक सात होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक सात होता है। अंक सात का अधिष्ठाता भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह को माना गया है। इन ग्रहों के थोड़े-बहुत प्रभाव आपके ऊपर आयेंगे। मूलांक सात के प्रभावश आपके अन्दर कल्पना शक्ति की मात्रा अधिक रहेगी। काव्य रचना, गीत-संगीत सुनना, दूरदर्शन देखना आपकी अभिरुचि में समाहित रहेगा। ललित कलाओं, लेखन, साहित्य आदि में आपकी रुचि रहेगी। आर्थिक सफलताएं आपको अधिक नहीं मिलेंगी तथा धन संग्रह करना भी आपको मुश्किल लगेगा। यात्रा, पर्यटन, सैर-सपाटा इत्यादि आपको विशेष अच्छा लगेगा।

दूसरों के मन की बात समझने में आप निपुणता हासिल करेंगे एवं सामने वाले को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति भी आपके अन्दर रहेगी। धर्म के क्षेत्र में आप परिवर्तनशील विचारधारा के रहेंगे एवं पुरानी रूढ़ियों, रीतियों में अधिक रुचि नहीं लेंगे। आपको ऐसे रोजगार-व्यापार पसन्द आयेंगे, जिनमें यात्रायें होती रहती हों तथा दूर-दूर के देशों से सम्पर्क बना रहे। आप ऐसा ही रोजगार चुनेंगे, जिनमें यात्रा के अवसर मिलते रहें।

अतीन्द्रिय ज्ञान की अधिकतावश जहाँ आप दूसरों के मन की बात को जान जायेंगे वहीं आपको स्वप्न भी अद्‌भुत प्रकार के आते रहेंगे। आपको विदेशों से, जहाज, मोटर इत्यादि वाहनों से विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

Mr.

आपका जन्म दिनांक 20 है। दो एवं शून्य का जोड़ दो आपका मूलांक होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र तथा शून्य शिव या ब्रह्म है। इनके संयुक्त प्रभाव से आप एक सौम्य, सुन्दर एवं कल्पनाशील महिला होंगी। कल्पना शक्ति आपकी श्रेष्ठ रहेगी। अधिकांश कार्य आप अपनी बुद्धि से करेंगी। शारीरिक कार्यों में आपकी रुचि कम होगी। चन्द्र प्रभाववश आप अपनी योजनाओं में काट-छांट करने की आदी रहेंगी। इससे आपका कार्य देर से पूर्ण होगा। आपकी कुछ योजनाएं अधर में ही लटक जायेंगी। जिनका आपको पछतावा होगा तथा मानसिक यातना भी होगी।

मन आपका चंचल होने से आप गतिशील रहना पसन्द करेंगी। इस स्वभाव से आप दूर-दूर की यात्राएं करेंगी तथा देश विदेश का भ्रमण करेंगी। एकाध यात्रा तो ऐसी होंगी जो आपका भाग्य बदल देंगी। आत्मविश्वास की आप में कमी रहेगी। इससे कई कार्य आपके समय पर पूर्ण नहीं होंगे। कभी-कभी आप निराशा में डूब जायेंगी और शून्य की भाँति आपको जीवन अंधकारमय लगेगा। लेकिन धैर्य एवं साहस से कुछ समय उपरांन्त आप पुनः खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेंगी।

सामाजिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी। जनता के मध्य आप लोकप्रिय रहेंगी। इससे आपकी मानसिक स्थिति काफी संतुलित रहेगी। चन्द्र स्वभाव से आपको सर्दी-जुकाम, कफ इत्यादि के रोग यदा-कदा पीड़ित करेंगे। मानसिक ऊर्जा का आप अधिक प्रयोग करेंगी। इस कारण कभी-कभी सिर दर्द, मानसिक तनाव इत्यादि होंगे। वैसे मूलांक के प्रभाव से आप अपने जीवन में एक सफल, लोकप्रिय तथा हैसियत वाली महिला होंगी।

Ms.

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

Mr.

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगी। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगी, जहाँ आपकी हुकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगी। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगी। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगी।

लग्न फल

Ms.

आपका जन्म स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में तुला लग्नोदय काल हुआ था। तुलालग्नोदय काल मेदिनीय क्षितिज पर मीन नवमांश के साथ-साथ कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपके जन्म लग्नोदयादिक प्रभाव से यह दृश्य हो रहा है कि आप गपशप करने वाले होंगे। आपका जीवन आकर्षक परंतु आप दूसरों के साथ इर्ष्या रखने वाले होंगे।

आप अपनी आयु के 30 से 35 वें वर्ष के अंतराल में काफी धन संपति का अर्जन करेंगे तथा आपका जीवन आनंदपूर्वक व्यतीत होगा। आपका रूप आकर्षित होगा आप अपने प्रताप से बहुत धन का व्यय करेंगे तथा अपना सांसारिक जीवन किस प्रकार बिताया जाए। इस बात का अन्वेषण करेंगे। आप अपने फिजूल खर्ची पर नियंत्रण करेंगे तो अनुकूल रहेंगे। अन्यथा आपकी वृद्धावस्था अति सुखद ही नहीं होगी अपितु वह अवस्था निरस भी हो जाएगी।

आप धार्मिक भावना के प्राणी होंगे। आप अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण कर सत्यकार्यों में दान प्रदान करेंगे। यह संभाव्य है कि आपमें अनेक गुण विद्यमान होंगे तथा आप विश्वसनीयता पूर्वक व्यवहार करेंगे। आप भगवान की कृपा से उत्तम संतान के पिता होंगे। वे अपना नाम एवं अपनी प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपकी अपनी जीवन संगिनी के रूप में उपयुक्त एवं आदर्श पत्नी प्राप्ति हेतु मिथुन अथवा कुंभ राशि की जातक का चयन करना उत्तम होगा। परंतु यदि आपकी पत्नी कर्क, मकर अथवा मीन राशीय समुदाय की हुई तो वह आपकी आवश्यकता अथवा अनुरूपता के योग्य नहीं होंगी।

परंतु यदि आपकी संगिनी आपको श्रेय नहीं प्रदान करे तो आपको हतोत्साह होने की आवश्यकता नहीं है। आप किसी भी तरह से अपनी पत्नी से विद्वेष नहीं करेंगे।

वास्तव में आप बहुतायत में अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल करने के लिए तथा सुव्यवस्थित करने के लिए आपकी पत्नी बेशकीमती आभूषण एवं बहुमूल्य वस्त्रादि से युक्त अपने परिवार के जीवन यापन को प्रमुखता देगी। आप अपने भवन को अपने मित्र एवं सगे संबंधियों की दृष्टि में आकर्षक बनाएंगे। इसके बिना आप अपने रहन सहन को दुष्कर अनुभव करेंगे।

तुला प्रभावित जातक सामान्यतः स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से उत्तम एवं उच्च स्तरीय आनंद से युक्त होता है। परंतु वह छुआछूत की बिमारी से वह अद्योगामी भी हो सकता है एवं आयुवृद्धि के कारण मूत्र संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। अस्तु आपको इसके विरूद्ध सुरक्षात्मक कदम उठाने चाहिए।

आप हर दशा में धन एवं सुंदर सुखद भवन से युक्त होंगे। आप समयानुकूल अपने कार्य कलाप का संपादन करे निश्चित समय पर भोजनादि कर सकते हैं बशर्ते कि आप

निम्नांकित निर्देशन का अनुपालन कर सकें।

आपके लिए अनुकूल एवं उत्तम रंग लाल, नारंगी एवं सफेद रंग है। इसके अतिरिक्त आपको पीला एवं हरा रंगों का त्याग करना चाहिए।

आपके लिए अंको में 1, 2, 4 एवं 7 अंक अनुकूल है। इसके अतिरिक्त 3, 5, 6 एवं 9 अंक आपके लिए हानिकारक है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

Mr.

आपका जन्म मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण में धनु लग्न में हुआ था। धनु लग्नोदित काल मेदिनीय क्षितिज पर वृषभ राशि का नवमांश एवं धनु राशि में द्रेष्काण के प्रभाव से ज्योतिषीय आकृति यह स्पष्ट करता है कि आपका संपूर्ण जीवन आरामदायक बीतेगा। यह ज्योतिषीय तथ्यों द्वारा प्रमाणित है।

आप शारीरिक, अर्थिक एवं भोग विलास से युक्त जीवन बिताने के लिए भगवान द्वारा प्रदत्त वरदानों के अनुरूप सुखी रहेंगी। आप स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं निर्भीक जीवन व्यतीत करेंगी। यदि कोई आपको हानि पहुंचाये अथवा पीड़ा पहुंचाये तो निष्कट भाव से उसे परास्त कर देंगी। यथा आप किसी भी विषय में अपनी राय स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देंगी। आप मात्र विश्वसनीयता पूर्वक ऐसा वक्तव्य देंगी। निश्चयपूर्वक सभी लोग इस प्रवृति को पसंद नहीं करेंगे। अतएव आप अपनी भाषा पर निगरानी रखें।

आप धन प्राप्ति के पश्चात् परम प्रकृति पुरुष अर्थात् ईश्वर एवं धर्म के संबंध में विचार करके आप धर्म एवं दर्शन के प्रति सफलता प्राप्त कर सकेंगी। यह संभाव्य है कि आप अपनी आयु के 27 वें वर्ष अथवा 31 वे वर्ष की आयु में हवा में गिरा फल के समान धन प्राप्त करेंगी। अर्थात् आकस्मिक रूप से धनी हो जाएंगी।

निःसंदेह आप अपने परिवार एवं बच्चों के प्रति तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अच्छी प्रकार चिंतन करेंगी तथा परिवारिक सुख प्राप्ति में अभिरूचि लेंगी। परंतु आप उनके साथ अधिक समय व्यतीत करने में सक्षम नहीं होंगी, क्योंकि आपका अधिक समय यात्रा करने, मार्केटिंग करने, खेलकूद में व्यस्त रहने अथवा बाहरी कार्यक्रम में व्यस्त रहेगा। तथापि आप अपने समझदार पति एवं उदीयमान पुत्रों से युक्त होंगी।

आप जब कभी भी किसी कार्य के प्रारंभ करने के हस्ताक्षरित करेंगी,उस कार्य को प्रति उत्पन्नमति से संपादित कर सफल हो जाएंगी। आप अधिक से अधिक लोगों द्वारा आनंद प्राप्त करेंगी। आपमें अंतःप्रज्ञा की शक्ति निहित है। आपकी अधिकाधिक भविष्यवाणी की आकृति अनुमानित सच्चाई पर विचारणीय होती है। इस अच्छे गुण को अच्छी प्रकार कार्यान्वित करने के

गुण आपमें विद्यमान है। आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सुगमतापूर्वक अपेक्षित एवं अनुकूल संपादन करेंगी।

आप सदैव ही कुछ न कुछ कार्य करती रहेंगी। फिर भी सभी को कुछ न कुछ अभावग्रस्त रहना ही पड़ेगा। आप अपनी किसी भी प्रकार की समस्या को अच्छी प्रकार संभालने के लिए समर्थ होंगी। यद्यपि आप प्रायः सभी दृष्टिकोण से आशावान रहेंगी। परंतु आपका स्वास्थ्य किसी न किसी विंदु पर चिन्ताजनक होगा। आप निश्चय पूर्वक अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द अवश्य ही प्राप्त करेंगी। परंतु ऐसी आशंका है कि आप गठिया वायु रोग, जुकाम, सर्दी एवं कफ जनित रोग तथा हड्डी रोग से संबंधित समस्याएं से प्रभावित हो सकती हैं।

आपके लिए रंगों में सफेद क्रीम रंग, नीला, सूआपंखी, नारंगी एवं हरा रंग आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली है। परंतु रंग लाल, काला एवं मोतिया रंग अनुपयुक्त हैं।

आपके लिए अंकों में अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक अनुकूल है, जबकि अंक 2, 7 एवं 9 अंक आपके लिए त्यागनीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में मंगलवार, गुरुवार, एवं रविवार का दिन बहुत उत्तम प्रमाणित होगा। शुक्रवार एवं शनिवार का दिन एकदम खराब है।

परंतु सोमवार एवं मंगलवार का दिन आपके हित सर्वथा त्याजनीय है।

नक्षत्रफल

Ms.

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "रि" या "री" अक्षर से शुरू होगा।

आप स्वभाव से ही धर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा रखेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप समय समय पर इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। आप स्त्री पुत्र सहित हमेशा सन्तुष्ट रहने वाली प्रकृति के पुरूष होंगे। अनावश्यक इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। आप हमेशा धनधान्य तथा ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

आप हमेशा विभिन्न प्रकार की वेशभूषा को धारण करने के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा गले में भी माला आदि को धारण करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर तथा आकर्षक होगी एवं शरीर भी सौन्दर्य से युक्त रहेगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

आप अपने मन के किसी भी भेद को हमेशा अपने ही हृदय में गुप्त रखेंगे तथा किसी अन्यजन को उस के बारे में कुछ भी नहीं बताएंगे। आपकी यह प्रवृति स्वाभाविक होगी तथा आजीवन इस प्रवृति का पालन करेंगे। समाज के लोगों में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा अतः सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका अन्य जनों के प्रति भी अनुराग का भाव रहेगा तथा उनसे मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

आप अत्यन्त ही पराक्रमी एवं प्रतापी पुरूष होंगे तथा अपने पराक्रम से शत्रुओं को पराजित करने तथा कुचलने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। शत्रुपक्ष आपसे इतना भयभीत रहेगा कि आपके विरूद्ध मुहं खोलने का उनमें साहस नहीं रहेगा। नीति शास्त्र के आप महान विद्वान होंगे तथा नीति संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने में अत्यन्त ही निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। शास्त्रों के प्रति भी आपका सम्मान का भाव रहेगा तथा अपनी अद्भुत बुद्धि से सम्पूर्ण शास्त्रों के

ज्ञानार्जन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

Mr.

आप धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी मध्य, वर्ण वैश्य, गण राक्षस, वर्ग मार्जार तथा योनि सिंह होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गि" या "गी" अक्षर से होगा। यथा- गीता आदि

आप जीवन में सदाचार का नियमपूर्वक अनुपालन में सर्वदा तत्पर रहेंगी तथा आपका चरित्र भी उत्तम रहेगा एवं लोगों के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणनीय भी होगा। आप एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपका व्यवहार विनम्र तथा सुशील रहेगा। अतः अधिकाँश लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा प्रायः सहमत रहेंगे। धन सम्पति का आपके पास अभाव नही होगा। तथा एक धनाढ्य महिला के रूप में समाज में आप का प्रभाव रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी पूर्ण प्रधानता रहेगी। आप एक कृपालु महिला भी रहेगी तथा दीन दुःखियों एवं जरूरत मन्द लोगों को आप विशेष सहायता एवं सहयोग प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपको पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा आपकी ख्याति भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

आप में नैराश्य की भावना का सर्वथा अभाव रहेगा एवं आशान्वित होकर आप जीवन में सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करती रहेंगी अतः मानसिक कष्ट आपको अल्प मात्रा में ही होंगे। साथ ही समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुख संसाधनों से युक्त रहकर आप प्रसन्नतापूर्वक जीवन में इनका उपभोग करने में सफल रहेंगी।

आशालुर्वसुमान वसूद्भुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

संगीत के प्रति आपके मन में प्रारम्भ से ही हादिक रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगी तथा कई लोगों के द्वारा आपको प्रशंसा भी प्राप्त होती रहेगी। परिवारिक जनों तथा अन्य बन्धु वर्ग के मध्य सम्मान प्राप्त करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगी तथा ये सभी लोग आपको हादिक स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप कई प्रकार के स्वर्ण आभूषणों तथा अन्य बहुमूल्य रत्नों से भी सुशोभित रहेंगी तथा इनका किसी भी तरह उपभोग करती रहेंगी। साथ ही आपका प्रभाव क्षेत्र भी विस्तृत

रहेगा एवं लोग आपकी आज्ञा का अनुपालन के लिए तत्परता से आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा करेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

आपका स्वभाव दानशीलता की भावना से युक्त रहेगा। अतः समय समय पर यथा शक्ति आप अपनी इस प्रवृति का समाज तथा अन्य लोगों के समक्ष अनुपालन करती रहेंगी। इससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आपके प्रति श्रद्धा भाव रखेंगे। इससे आपको समाज में यश की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त समस्त शौर्य गुणों से आप सुसम्पन्न होंगी एवं साहस पूर्वक अपनी समस्त सांसारिक समस्याओं का सामना करेंगी एवं उनका समाधान भी करेंगी परन्तु धन के प्रति आपके मन में लोलुपता रहेगी। अतः कई बार इससे आपको अनावश्यक परेशानी एवं प्राप्त होगी।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

राशिफल

Ms.

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आपका शरीर तथा मुख देखने में सुन्दर रहेगा। आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊँची होगी। आपके पास वाहनों की बहुलता रहेगी। स्त्री वर्ग के प्रति आपमें आकर्षण की प्रबलता रहेगी तथा इनसे आपके घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे। आपको वाहन के अतिरिक्त भूमि आदि जायदाद से भी बल एवं लाभ प्राप्त होगा। शुद्धता तथा पवित्रता के प्रति आप का विशेष ध्यान रहेगा। आप पराक्रम के ज्ञाता होंगे तथा सम्पूर्ण समाज में आपका उच्च प्रभाव एवं आकर्षण रहेगा। कार्यो को सम्पन्न करने में आप अत्यन्त ही चतुर एवं कुशल होंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहरी श्रद्धा होगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी भक्ति में सदैव तत्पर रहेंगे। आप अतुल धन तथा ऐश्वर्य से हमेशा सुशोभित रहेंगे। इनका आपके पास अभाव नहीं रहेगा। स्त्री से आप हमेशा पराजित रहेंगे तथा अधिकांश कार्य उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। धन धान्यादि के संग्रह करने में भी आपकी प्रवृति संलग्न रहेगी तथा भाई बन्धुओं का आप उपकार करते रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप श्रेष्ठ एवं भद्र पुरूषों तथा समाज सेवा के कार्य में सदा तत्पर रहेंगे तथा विद्धता एवं पवित्रता से हमेशा सुशोभित रहेंगे। भ्रमण करना तथा यात्राएं आदि के प्रति आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय इन्हीं पर व्यतीत करेंगे। वस्तुओं को खरीदने तथा बेचने के कार्य में आप हमेशा निपुण रहेंगे। आप अपने समस्त बन्धु वर्ग का उपकार एवं सहायता करेंगे परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपकी उपेक्षा होगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्धि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य का गुण विद्यमान रहेगा तथा अधिकांश कार्यो को आप धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक न्यायप्रिय व्यक्ति होगे तथा न्याय के प्रति पूर्ण आस्था रखेंगे। आपकी इस प्रवृति को ध्यान में रखते हुए अन्य लोग अपने आपसी विवादों में आपको पंच या मध्यस्थ नियुक्त करेंगे। साथ ही आपका भाग्योदय भी देर से होगा एवं संतति संख्या भी अल्प ही रहेगी।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका कद मध्यम रहेगा। उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में अतीव चतुराई का प्रदर्शन करेंगे एवं उनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही बंधुवर्ग को आप हमेशा कुछ न कुछ सहायता प्रदान करते रहेंगे। परन्तु कभी कभी आप अधिक तथा व्यर्थ की बातें भी बोलने लगेगे। अतः लोगों पर आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। ज्योतिषशास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्र विद्या के आप प्रसिद्ध विद्वान हो सकते है। इसके अतिरिक्त संबंधी बन्धु तथा सेवकों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

यदा कदा आप गलत स्थान पर या अनुचित समय पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। जिससे आप दुःख को प्राप्त करेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे जिससे अन्य लोगों के ऊपर आपके प्रभाव की वृद्धि होगी। साथ ही आप एक दयालु तथा कृपालु व्यक्ति होंगे तथा सबके प्रति अपनी इस भावना को बनाए रखेंगे। आपकी आखें चंचलता से युक्त रहेंगी। धनागमन आपके पास अस्थिर मात्रा में रहेगा। कभी तो अतिशय धन प्राप्ति होगी तो कभी कुछ नहीं मिलेगा। अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्ति की अनुभूति करेंगे। घर के अन्दर आप बलशाली होंगे परन्तु घर से बाहर अत्यन्त ही कमजोर महसूस करेंगे। मित्र वर्ग से आपका पूर्ण सहयोग तथा प्रेम का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप घर से दूर परदेश या विदेश में भी निवास कर सकते हैं।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन में वाहनादि से सदैव सम्पूर्ण रहेंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में सर्वथा विद्यमान रहेगा। स्त्रीवर्ग से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा मित्र एवं बंधु वर्ग के भी स्नेही होंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए ।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता इत्यादि अन्य अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, चांदी, हीरा, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न कराने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।

Mr.

मकर राशि में जन्म होने के कारण आपका कद ऊँचा होगा तथा मस्तक भी विशाल रहेगा। आपकी आखें देखने में सुन्दर होंगी एवं शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा। संगीत के प्रति आपके मन में तीव्र रूचि रहेगी तथा इसका आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। अतः इस क्षेत्र में आप सफलता तथा यश को प्राप्त करेंगी। ठंड से आप अत्यधिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगी एवं इसे सहन करने में प्रायः असमर्थ ही रहेंगी। आपके मन में सत्य के प्रति असीम निष्ठा का भाव रहेगा तथा जीवन में यत्नपूर्वक इसका पालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी। आप बाह्य रूप से धर्माचरण भी करेंगी तथा लोगों के दिखावे के लिए इसके प्रति असीम श्रद्धा का भाव एवं धार्मिक कृत्यो का अनुपालन करेंगी। समाज में आप एक माननीय महिला समझी जाएंगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही इनके मध्य आप पूर्ण रूपेण लोकप्रियता भी अर्जित करेंगी। आप में क्रोध का भाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। आपके मन में सब के प्रति स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा। आप अपने से अधिक आयु के लोगों से मित्रता करना पसन्द करेंगी तथा उन्ही से अपने घनिष्ठ संबंध भी रखेंगी। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकेगी। उत्साह के भाव की आप में पूर्णता रहेगी तथा लालची प्रवृति की अधिकता होने के कारण कभी कभी आप अनावश्यक कष्ट तथा परेशानियां भी प्राप्त करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।

चार्वक्षः क्षामदेहो गुरुयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पति एवं पुत्र सहित सदैव परिवार के पालन पोषण में व्यस्त रहेंगी। आप में आलस्य का भाव भी विद्यमान रहेगा परन्तु सौभाग्य की हमेशा प्रवलता रहेगी। अतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाएंगे। यात्रा तथा भ्रमण करने के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा आपका अधिकांश समय इसी में व्यतीत होगा। शारीरिक बल भी आप में मध्यम रूप से रहेगा परन्तु आप एक निर्भय तथा साहसी महिला होंगी। अतः कठिन कार्यो को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने के लिए सर्वदा उत्सुक एवं उद्यत रहेंगी। इसके अतिरिक्त वायु से उत्पन्न रोगों से आप प्रायः पीड़ित एवं व्याकुल रहेंगी तथा समय समय पर इससे कष्टानुभूति प्राप्त करती रहेंगी। आप में सत्वगुणों की भी प्रधानता रहेगी तथा इनसे युक्त रहकर आप यत्न पूर्वक इनका पालन करके सुखी जीवन व्यतीत करेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवारिक जनो के मध्य आप सामान्य आदर ही प्राप्त कर सकेंगी परन्तु कुल की रीति या मर्यादा अनुपालन करने तथा उसकी वृद्धि करने में आपका महत्वपूर्ण सहयोग रहेगा। पति को वश में करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। इस विषय में स्वतंत्र निर्णय लेने में वे प्रायः असमर्थ से रहेंगे। आप विभिन्न शास्त्रों की ज्ञाता होंगी। अतः एक विदुषी के रूप में भी समाज में आपका सम्मान तथा ख्याति रहेगी। माता के प्रति आप के हृदय में विशेष सेवा तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। आप जीवन में पुत्रों से युक्त होकर जीवन में सुखपूर्वक इनका सहयोग प्राप्त करेंगी। आप धन से परिपूर्ण रहेंगी एवं त्याग की भावना का समावेश भी आप में रहेगा जिसका आप समय समय पर परिवारिक तथा सामाजिक जनों के मध्य प्रदर्शन करती रहेंगी। आपका परिवार विशाल होगा एवं सुख प्राप्ति के लिए नित्य आप चिन्तित रहेंगी एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए यत्नपूर्वक परिश्रम करेंगी तथा उनकी प्राप्ति में सफल भी रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन काल में किसी अन्य मित्र संबंधी या व्यक्ति की धन सम्पत्ति को प्राप्त करेंगी तथा आनन्द पूर्वक उसका उपभोग भी कर सकेंगी। समाज में अन्य जनों के हितों के प्रति भी आप चिन्तन करेंगी तथा यत्नपूर्वक उनकी समस्याओं के समाधान तथा हित कार्यों के प्रति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप सलाह देने तथा मंत्रणा करने के कार्य में भी अत्यन्त प्रवीण रहेंगी। अतः अन्य लोग आपकी इस प्रवृति के कारण आपसे प्रभावित रहेंगे तथा इससे लाभान्वित भी होते रहेंगे। बन्धु वर्ग की आप पालनकर्ता रहेगी एवं पूर्ण रूप से सुख दुःख में उनको सहयोग देगी तथा मार्ग दर्शन भी करेंगी जिस से उनसे आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। इसके साथ ही शौर्य गुणों से सुशोभित रहकर आप साहस पूर्वक जीवन यापन करने में तत्पर रहेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गान विद्या में रूचि शील रहने के कारण आप इस क्षेत्र में विशेष सफलता तथा ख्याति अर्जित करने में पूर्ण रूपेण समर्थ रहेंगी। आप की शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी तथा इससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि भी होती रहेगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुदर्शी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंच धातु, तिल, तेल, कम्बल एवं चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य में भी सुधार होगा। साथ ही समस्त अशुभ फल समाप्त होकर शुभ फल प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी सुयोग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए।

इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

पाया विचार

Ms.

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

Mr.

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

गण फलादेश

Ms.

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक बातों को कहने की होगी। आपके हृदय में दया एवं करूणा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। आप एक साहसी पुरूष होंगेतथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति शीघ्र ही छोटी छोटी बातों में क्रोधित होने की भी रहेगी। आप अपनी कार्य सिद्धि के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे। शारीरिक बल से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी कभी आपकी विवाद की प्रवृति भी रहेगी तथा लोगों से आपका विरोध भी रहेगा। अतः संयम पूर्वक अन्य जनों से सम्पर्क करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

आप प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी जीवन काल में पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपकी मुखाकृति भी सामान्य आकर्षक रहेगी। आप अपनी भाषा में कभी कभी ऐसे शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे सुनने वाला आपसे अप्रसन्नता का भाव प्रकट करेगा। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

Mr.

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने की रहेगी। साथ ही सामान्य कठोरता का भाव भी आपके मन में रहेगा जिसका आप प्रायः अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी। आप का स्वभाव भी साहसी एवं निर्भय रहेगा तथा आपके अधिकांश कार्य साहस पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। साथ ही आप में क्रोधाधिक्य भी रहेगा तथा कई बार अकारण ही उत्तेजित भी हो जाएंगी। आपका अन्य लोगों से परस्पर विवाद भी होता रहेगा। साथ ही शारीरिक बल भी आप में पूर्ण रहेगा परन्तु समाज में अधिकांश लोगों से आपका वैमनस्य का भाव रहेगा।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह आदि रोगों से भी पीड़ित हो सकती हैं। साथ ही आपके स्वरूप में आकर्षण भी मध्यम रहेगा। अपने सम्भाषण में कभी कभी कठोर शब्दों का भी

प्रयोग करेंगी जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप में यत्नपनर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग कें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Ms.

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अपने समस्त कार्यो को स्वच्छन्द तथा स्वतंत्रतापूर्वक सम्पन्न करने के प्रति रूचिशील रहेंगे अपने कार्यो में दूसरों का हस्तक्षेप आपको रूचिकर नहीं लगेगा। साथ ही धनधान्यादि संग्रह करने में भी आपकी प्रवृति रहेगी। अच्छी बातों तथा गुणों को आप शीघ्र ही ग्रहण करेंगे। धन तथा वैभव से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे परन्तु आप अपने ही मुहं से अपनी प्रशंसा करेंगे अतः अन्य जन इसे पसन्द नहीं करेंगे।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

Mr.

सिंह योनि में पैदा होने के कारण धर्म के प्रति आपके ह्दय में पूर्ण श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा इसके अनुपालन में आप सर्वदा तत्पर रहेंगी। आप की प्रवृति हमेशा अच्छे कार्यो को करने के प्रति रूचिशील रहेगी इससे आप प्रायः सत्कार्यो को ही करेंगी जिससे अन्य लोग भी आपसे लाभान्वित होंगे एवं आपको पूर्ण मान तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप सर्वप्रकार के सद्गुणों से भी युक्त रहेंगी तथा जीवन में हमेशा इसका अनुपपलन करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त परिवार की सुख समृद्धि एवं उत्थान के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगी एवं परिश्रम पूर्वक इस कार्य को करती रहेंगी जिससे आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

ग्रह फल – सूर्य

Ms.

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

Mr.

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य की स्थिति चतुर्थ भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। धन वैभव से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको सहयोग प्रदान करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप उनसे समान्यतया धन सम्मान एवं वाहनादि भी प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही वे व्यापार तथा अजीविका सम्बन्धी कार्यों में भी आपकी सहायता करेंगे।

आपके मन में उनके प्रति सामान्य श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इच्छानुसार यदाकदा उनकी आज्ञा का अनुपालन भी करती रहेंगी। परन्तु आपके आपसी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर कई प्रकार के मतभेद विद्यमान रहेंगे फिर भी आप अपनी ओर से उन्हें कम से कम कष्टानुभूति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगी एवं अवसरानुकूल उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

ग्रह फल – चन्द्र

Ms.

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

Mr.

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य ाध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

ग्रह फल – मंगल

Ms.

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

Mr.

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे

परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

ग्रह फल - बुध

Ms.

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

Mr.

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरू, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

ग्रह फल – गुरु

Ms.

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

Mr.

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

ग्रह फल – शुक्र

Ms.

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

Mr.

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

ग्रह फल – शनि

Ms.

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

Mr.

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

ग्रह फल – राहु

Ms.

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

Mr.

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

ग्रह फल – केतु

Ms.

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

Mr.

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Ms.

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला लग्न में जन्में जातक सामान्यतया स्वस्थ एवं सुगठित शरीर के व्यक्ति होते हैं तथा उनमें आकर्षण विद्यमान रहता है। उनकी प्रवृति हास्य प्रिय रहती है तथा बच्चों के प्रति मन में विशेष स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दरता के ये प्रिय होते हैं तथा सुन्दर वस्तुओं एवं दृश्यों के प्रति आकर्षित रहते हैं। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते तथा सबसे समानता का व्यवहार करते हैं जिससे इनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि बनी रहती है। कला से इनका भावनात्मक संबंध रहता है तथा सत्कर्मों से इनकी आजीविका चलती है। नीति सम्बन्धी कार्यों में ये दक्ष रहते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन ये एक सिद्धांत पर आस्था नहीं रखते तथा अवसरानुकूल उसमें परिवर्तन करते रहते हैं। साथ ही इनमें भावुकता तथा संवेदनशीलता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप हास्य प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा गम्भीरता आपको विशेष रूचिकर नहीं लगेगी। प्राकृतिक दृश्य आपको अत्यंत ही प्रिय होंगे एवं कला के क्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे तथा इससे आपका भावनात्मक संबंध होगा।

राजनीति या कार्य क्षेत्र में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके पराक्रम एवं प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रंथ आदि का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में वृद्धि होगी।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुन्दर एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा उनकी सेवा करने में आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी। बाल्यवस्था में आप संघर्षशील रहेंगे परन्तु युवावस्था के बाद आपको सुख एवं समृद्धि की प्राप्ति होगी।

कार्य क्षेत्र में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। कला एवं संगीत में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आपको जीवन में मान सम्मान धनैश्वर्य तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो सकती है। आप का स्वभाव उदार एवं परोपकार की भावना से युक्त रहेगा तथा अन्य जनों की समय समय पर आप सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आप एक आस्तिक व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी

तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही मित्र वर्ग में भी आप लोकप्रिय होंगे तथा वे सभी शिक्षित एवं गुणवान होंगे तथा आपको उनसे लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आप शांत न्याय पर विश्वास करने वाले तेजस्वी एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

Mr.

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली महिला होंगी तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक अध्ययनशील महिला होंगी अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपके रूचि रहेगी तथा जीवन में निहित उददेश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगी। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रहेंगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगी तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगी तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगी। आर्थिक दृष्टि से भी आपके स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगी। पुत्र संतति से आप युक्त होंगी तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों की महिला होंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विदुषी पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृति के महिला होंगी तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Ms.

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

Mr.

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगी तथा अपने अधिकांश समय को अनावश्यक वार्तालाप में व्यतीत करेंगी। आप इतनी बातूनी महिला होंगी कि अन्य लोग आप पर आसानी से नियंत्रण नहीं कर सकते हैं। आप आधुनिक विचारों से युक्त रहेगी तथा स्वभाव में विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके साथ ही आसानी से किसी को अपना मित्र नहीं बनाएंगी तथा खूब सोच समझकर जब किसी से पूर्ण सन्तुष्ट हो जाएंगी तभी उसे अपना मित्र बनाएंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा। लेकिन आंतरिक मन से परिवार के विषय में पूर्ण चिन्तित रहेंगी परन्तु प्रयत्क्ष में उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करेंगी। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो सकता है अतः ऐसी स्थिति में आपको सावधान रहना चाहिए फिर भी पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा उनकी प्रसन्नता तथा खुशहाली के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार के स्वादों की प्रिय रहेंगी तथा समय समय पर इनका आस्वादन करती रहेंगी लेकिन यदा कदा आपको नेत्र संबंधी रोग से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नौकरी या

अन्य साधनों से आप धनार्जन करेंगी साथ ही विदेश में भ्रमण आदि से भी लाभान्वित हो सकती हैं। इस प्रकार आप वैभव शाली जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

Ms.

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने मे समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रूचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

Mr.

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु या विषय को आसानी से नहीं भूल पाएंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही वे आदर्श बुद्धिमान तथा आज्ञाकारी होंगे। उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आपको वे यथोचित सहयोग तथा सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगे। आप परस्पर एक दूसरे की कमियों तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे पारिवारिक शान्ति बनी रहेगी। मित्र एवं संबंधियों से भी सामान्यतया आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा उनसे अवसरानुकूल इच्छित सहयोग मिलता रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं विद्वता से उपलब्धियां अर्जित करेंगी। साथ ही यदि कोई परेशानी या समस्या हो तो आप दृढ़ता पूर्वक उसका सामना तथा समाधान करेंगी आप जो कहेंगी वहीं करेंगी भी यह आपके व्यक्तित्व की

विशेषता रहेगी। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप सिद्धान्त वादी महिला होंगी तथा अपने सिद्धांतों पर हमेशा दृढ़ रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा फोन टेलीविजन तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। नृत्य एवं संगीत के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा रिक्त समय में आप इनसे अपना मनोंरजन करेंगी । आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं ख्याति भी प्राप्त होगी। साथ ही अध्ययन एवं सूचना संबंधी लेखों के प्रति आपका आकर्षण रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मित्रता कीर्तिवान, क्षमाशील, सत्यवक्ता तथा उत्तमशील स्वभाव के व्यक्तियों से होगी तथा समस्त सुखों का उपभोग करते हुए भाग्यशाली महिला होंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Ms.

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। विवाह के बाद पत्नी के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगे। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकते है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का मर्जी से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

Mr.

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा नवमेश सूर्य भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक सुखों को प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी। फलतः समाज में यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान देंगे। इस प्रकार अपने रहन-सहन एवं स्तर से आप सामान्यतया सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त रहेंगी। पिता से आपको भी प्रचुर मात्रा में प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृदिद में वृद्धि होगी। अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं परिश्रम से भी आप वांछित मात्रा में धन-सम्पत्ति अर्जित करने में तत्पर रहेंगी। आपको चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से लाभ के योग बनते है। अतः आपको दोनों पर समयानुसार निवेश करते रहना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से आपका घर सुसज्जित होगा। इसकी स्वच्छता पर आप विशेष ध्यान देंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पडोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आपके आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा अच्छी श्रेणी के वाहन का आप प्रन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों एवं कर्तव्य परायणता से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में सफल होंगी। परिवार के सभी सदस्य उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान देंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा अवसरानुकूल वे आपको आर्थिक तथा नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी उन्नति में उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आज्ञाकारिकता का भाव रखेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही परीक्षा में अच्छी सफलता अर्जित करेंगी। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंको में उतीर्ण करके अपने भविष्य को उज्ज्वलता की ओर अग्रसर करेंगी। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं सामाजिक जनों से सम्मान, स्नेह एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी अन्य तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी डिग्री प्राप्त कर सकती हैं।

नैसर्गिक तेजस्वी ग्रह सूर्य की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप अल्प मात्रा में रक्तचाप संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा खान-पान का उचित ध्यान रखकर आप इससे मुक्त रहेंगी जिससे आपका समय प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Ms.

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बुध भी पंचमभाव में ही स्थित है। लग्नेश की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता होगी तथा ऐसे निर्णयों से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। जीवन में कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में आप समर्थ होंगे जिससे अन्य लोग भी आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। वैदिक, साहित्य, धर्म एवं दर्शन में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इसका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर होंगे जिससे एक विद्वान के रूप में आपकी छवि बनेगी साथ ही गणित, ज्योतिष एवं लेखन सम्बन्धी कार्यो में भी आपकी रूचि होगी तथा इस पर अपना काफी समय व्यतीत करके वांछित ज्ञानार्जन में समर्थ होंगे जिससे सामाजिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

बुध की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा इससे आपको मनोरंजन एवं आन्तरिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी होगा तथा एक दूसरे के प्रति भावनात्मक रूप से समर्पित रहेंगे जिससे आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है इससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

सन्तति भाव में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी। आपकी सन्तति योग्य बुद्धिमान एवं प्रतीभाशाली होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा आज्ञापालन में सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष आत्मिक लगाव होगा तथा अपनी समस्त व्यक्तिगत समस्याओं का निदान वे माता के माध्यम से करेंगे। लेकिन आदर एवं सम्मान दोनो के लिए बराबर होगा। वे वृद्धावस्था में आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के विषय में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही श्रेष्ठता का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कभी नहीं होने देंगे। इससे आपकी सन्तति का भविष्य उज्जवल होगा तथा सम्मानित स्तर प्राप्त करने में वे समर्थ होंगे। अपने विनम्र स्वभाव, व्यवहार कुशलता एवं उत्तम कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित एवं प्रसन्न करने में भी समर्थ होंगे जिससे सभी लोग उन्हें स्नेह एवं सम्मान की दृष्टि से देखेंगे फलतः आप की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बच्चों पर गर्व होगा।

Mr.

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकती हैं। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगी। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रूचिशील होंगी। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रूचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगी। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विदुषी के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगी। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सदभावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोंनो का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली महिला मानी जायेंगी।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेगी जिससे उनका भविष्य उज्जवल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगी तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगी। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चों को वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Ms.

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यो में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यो से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

Mr.

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप का शत्रु या विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपनी ही इच्छा से कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों की इच्छा या सलाह को कोई महत्व प्रदान नहीं करेंगी। आपका उच्च स्तर, कार्यप्रणाली तथा अन्य प्रकार से खुशहाली शत्रु वर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण होगा। साथ ही आपको अपने सम्बन्धियों तथा सहयोगियों से भी कई बार विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप सामान्यतया दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में लिप्त रहेंगी तथा इनमें मुक्त भाव से व्यय करेंगी जिससे आपको उचित सफलता

प्राप्त हो सकें। आप एक चतुर चालाक तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा साम, दाम, दण्ड, भेद से किस प्रकार से कार्य सिद्ध किया जाता है अच्छी तरह जानती है। अतः अपनी इस कार्य प्रणाली से शत्रु, विरोधी तथा मुकद्दमे आदि में विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

आपको नौकर चाकरों की सामान्यतया अत्यधिक आवश्यकता रहेगी क्योंकि आप एक व्यस्त महिला होगी तथा अपने दैनिक कार्यों को स्वयं सम्पन्न करने में असमर्थ रहेंगी अतः नौकरों की नियुक्ति आपके लिए आवश्यक रहेगी लेकिन यदा कदा सेवक वर्ग आपके गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे अतः इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। साथ ही वे चोरी आदि से भी हानि प्रदान कर सकते है अतः सेवकों के चुनाव में सावधानी रखें।

आपके पास आराम दायक जीवन बिताने के लिए प्रचुर मात्रा में धन होगा लेकिन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगी। जिससे ऋण आदि लेने की स्थिति बनेगी। आपके मामा मामियों का स्तर भी उच्च रहेगा। यद्यपि वे आपको पसन्द करेंगे परन्तु आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प ही प्रदान करेंगे तथा आपकी कार्य प्रणाली से भी असन्तुष्ट रहेंगे। लेकिन अत्यवश्यक समय पर वे आपको अपना सहयोग प्रदान कर सकते है। साथ ही उत्तम स्वास्थय के लिए आपको खान पान का ध्यान रखना चाहिए तथा अनावश्यक अनियमिताएं नहीं होनी चाहिए अन्यथा प्रौढ़ावस्था में आप शारीरिक अस्वस्थता से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Ms.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। शुक्र के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रूचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। शुक्र के प्रभाव से उनके कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर के अंग प्रत्यंगों की पुष्टता के कारण सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी तथा उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा साथ ही सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का मुक्त रूप से उपयोग करेंगी एवं सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होंगी संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी समीपी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में

विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

Mr.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा सप्तम भाव को मंगल भी प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में मिथुन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कला प्रेमी तथा हास्य प्रवृति का व्यक्ति होता है लेकिन मंगल के प्रभाव से वह तेजस्वी स्वाभिमानी पराक्रमी धनाढ्य एवं कार्यो को सम्पन्न करने में चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु उनमें तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अपने कार्यो को सम्पन्न करने में वह चतुर होंगे तथा अपने साहसी एवं पराक्रमी कार्यो से अन्य जनों को भी प्रभावित करेंगे। उनकी प्रवृति हास्य प्रिय भी होगी तथा अन्य जन भी उनकी हास्य प्रियता से प्रसन्न रहेंगे। सांसारिक कार्यो में भी वह दक्ष होंगे तथा कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा।

आपके पति लालिमा लिए गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पुष्ट रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य एवं आकर्षण में वृद्धि होगी शरीर में चुस्ती रखने के लिए वह व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगे। मिथुन राशि के प्रभाव से कला एवं संगीत के प्रति उनका आकर्षण रहेगा तथा कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत होंगे।

सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह किसी बंधु या संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनाओं को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से करेंगे इससे समानता एवं विश्वसनीयता बनी रहेगी।

आपका विवाह किसी समृद्ध एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा विवाह में आपको मायके से दहेज के रूप में पर्याप्त मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंधों में मधुरता कम औपचारिकता अधिक होगी तथापि उनसे आपको नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। आप भी अपनी ओर से उनसे सामान्य संबंध रखने के लिए यत्नशील रहेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा की भावना कम ही होगी एवं सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगे तथा उनके तेजस्वी व्यवहार से भी वे अप्रसन्न होंगे। साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें कम ही सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं होगी एवं इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Ms.

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरूष के रूप में जाने जाएंगे ।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुदंर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे ।

Mr.

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आपमें आध्यात्म संबन्धी शक्ति जन्म से ही विद्यमान रहेगी तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आपमें अन्तर्प्रज्ञा शक्ति की भी प्रबलता रहेगी फलतः आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी। यदि आपको कोई मानसिक या अन्य परेशानी उत्पन्न होगी तो आप सामान्यतया इन्हीं विद्याओं के द्वारा उसके निराकरण के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

आपको निश्चित रूप से पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आपका जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप की चल एवं अचल सम्पत्ति में वृद्धि भी हो सकती है तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से लाभ की पूर्ण संभावना रहेगी। आपका विवाह एक कुलीन परिवार में होगा तथा वे धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेंगे जिससे आपके दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी। किसी भी मूल्यवान वस्तु या स्वयं का बीमा

कराने में आप शीघ्रता का परिचय देंगी क्योंकि आप किसी भी वस्तु की सर्वप्रथम सुरक्षा का उपाय ढूंढती है तथा अनावश्यक हानि की संभावना को पहले ही समाप्त करना चाहती हैं । जीवन में चोरी डकैती या दुर्घटनाओं आदि की न्यूनता रहेगी तथापि यदि कोई ऐसी घटना घटित भी होती है तो इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करके आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Ms.

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरूष के रूप में जाने जाएगें।

विभिन्न धर्मो के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरूष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबधी कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

Mr.

आपके जन्म समय में नवम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने धर्म का श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगी। साथ ही पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का आचरण करेंगी। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा नेतृत्व के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आप स्वच्छन्द प्रवृति की महिला होंगी तथा धार्मिक गुरूओं या श्रेष्ठ जनों का मन से आदर करेंगी। साथ ही उनके अनुसरण करने के लिए उद्यत हो सकती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपका प्रचुर मात्रा में ज्ञान रहेगा तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की समय समय पर यात्रा करेंगी लेकिन मुख्य रूप से अपने धर्म के तीर्थ स्थानों पर जाना ही विशेष पसन्द करेंगी। आपकी ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी श्रद्धा रहेगी एवं इनका न्यूनाधिक ज्ञान भी हो सकता है। ध्यान एवं योग संबंधी क्रियाओं को भी

आप समय समय पर करती रहेंगी। आध्यात्म के द्वारा आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की वृद्धि होगी फलतः आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध हो सकती हैं।

आप एक सामाजिक प्राणी होंगी तथा स्वछन्दता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना रूचिकर लगेगा। साथ ही किसी के नियंत्रण में कार्य करना पसन्द नहीं करेंगी। धार्मिक एवं व्यवसाय संबंधी आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं हो सकती है इनमें आपको लाभ, ज्ञान एवं सम्मान प्राप्ति की संभावना रहेगी। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा वे आपकी पूर्ण सेवा करेंगे। वास्तव में आप वर्तमान समय में जो भी सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का उपभोग कर रहीं है यह सब आपके पूर्व जन्मों का फल है अतः सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक ही जीवन व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Ms.

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगे एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्रफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षिणक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकते है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

Mr.

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही बृहस्पति भी लग्नेश होकर दशमभाव में ही स्थित है। कन्या राशि पृथ्वीतत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा इसमें स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही सामयिक परिवर्तनों से भी आप लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी।

बृहस्पति की दशमभाव में कन्या राशि में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक, व्याख्याता, अनुष्ठान कर्ता, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, वकील, न्यायाधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभागों में सचिव, सलाहकार, प्रशासनिक क्षेत्र, ज्यौतिषी एवं राजनीति उत्तम एवं अनुकूल रहेगी। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी तथा इनमें अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य को प्रारंभ करना चाहिए। व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातुकार्य, शेयर क्रय विक्रय, वित्तीय संस्था का स्वामित्व, ब्याज द्वारा, स्वतंत्र कार्य यथा ज्यौतिष, वकालत आदि से वांछित उन्नति एवं लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही प्राइवेट कम्पनी के व्यवस्थापक के रूप में भी आपको उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी। अतः व्यापार के लिए उपरोक्त क्षेत्रों एवं कार्यो को ही सम्पन्न करें।

दशमभावस्थ बृहस्पति के शुभ प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगी। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान की प्राप्ति होगी एवं यश तथा प्रतिष्ठा भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। साथ ही आप किसी समाजिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्था के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य होंगी जिससे आपको अतिरिक्त मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। अतः अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान एवं आदर्श व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक के रूप में देखना चाहेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका मुख्य योगदान होगा जिससे आप सुगमता पूर्वक उन्नति करने में समर्थ होंगी। आप भी अपने परिश्रम एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Ms.

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगे विद्य मान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्ही के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यो में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सासांरिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

Mr.

आपके जन्म समय में एकादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक दूरदर्शी व्यावहारिक तथा न्याय प्रिय महिला होंगी तथा अपने इन्ही गुणों के साथ साथ पराक्रम एवं योग्यता से जीवन में अपनी महत्वाकांक्षाओं, इच्छाओं तथा संकल्पों को पूरा करेंगी। धन वैभव एवं सुख साधनों से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा जीवन में माता सास या अन्य सहेली के सहयोग से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके साथ ही विलासमय आभूषणों के विक्रय, इलक्ट्रोनिक्स के उपकरण तथा कम्प्यूटर आदि के क्षेत्र में भी आपका धनार्जन हो सकता है। यदि आप स्वयं कार्यरत नहीं हैं तो आपके पति उपरोक्त विभागों या कार्य से धन अर्जित करेंगे। इस प्रकार आय स्त्रोतों में वृद्धि करके आजीवन आर्थिक सुदृढ़ता को प्राप्त करेंगी ।

आपको जीवन में बड़ी बहिनों से सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा प्रत्येक क्षेत्र में वे स्नेह तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी एवं मार्गदर्शन भी करेंगी। साथ ही आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगी। आप मित्रता प्रिय महिला होंगी तथा मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। इनके मध्य आप आदरणीया रहेंगी तथा सभी आपसे प्रभावित रहेंगे। आपको एकान्त अच्छा नहीं लगेगा तथा कोई न कोई हमेशा साथ में रहेगा। समाज से आपको

इच्छित सम्मान प्राप्त होगा एवं अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठा तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करना भी अपना कर्तव्य समझेंगी जिससे जीवन में सामाजिक रूप से विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना रहेगी। इस प्रकार आप सुखऐश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना पारिवारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Ms.

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुदंर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते है तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते है।

Mr.

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप एक भौतिक वादी महिला होंगी तथा धनार्जन के लिए नित्य यत्नशील रहेंगी। आप अन्य जनों की भलाई के कार्यो को तन मन धन से करने के लिए भी तत्पर रहेंगी अतः समय समय पर आपको अधिक धन की आवश्यकता पड़ेगी लेकिन अपनी योग्यता तथा पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आपकी इच्छा धनऐश्वर्य से युक्त होने की हमेशा रहेगी साथ ही आर्थिक सुरक्षा के प्रति भी सतर्क रहेंगी तथा इस कार्य में आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

आपका व्यय मुख्य रूप से दया, दान, मित्रों तथा बन्धुवर्ग पर होगा। जब भी आपको इसका अवसर मिलेगा आप अवश्य कुछ न कुछ इन पर व्यय करेंगी। साथ ही भौतिक एवं विलासमय आधुनिक उपकरणों पर भी समय समय पर व्यय करती रहेंगी लेकिन

कभी कभी आपको ऐसे मामलों में सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि आपकी प्रवृति को देखते हुए लोग अकारण ही आपसे धन की मांग कर सकते है।

आपको दूर समीप की यात्राएं प्रिय कर लगेंगी। साथ ही युवावस्था में आप साहसिक कार्यो को भी सम्पन्न करेंगी तथा किसी नवीन सिद्धांन्त का भी प्रतिपादन कर सकती है। देश की यात्राओं के साथ साथ आपकी विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न होगी जिनसे आपको लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बाई आंख में किसी प्रकार की कष्टानुभूति कर सकती है लेकिन सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

दशा विश्लेषण

Ms.

महादशा :- गुरु
(29/09/2011 - 29/09/2027)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 29/09/2011 को शुरू और 29/09/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव, हानि और बाधा, फिजूलखर्च, व्यय, पारिवारिक अलगाव, सुदूर स्थानों की यात्रा, धोखाधड़ी और भाग्यहीनता, कैद, अस्पताल में भर्ती होना, धोखा, घोटाला, कलंक तथा गुप्त शोक, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति द्वादश भाव में तथा दृष्टि चतुर्थ, षष्ठ तथा अष्टम भाव पर है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। यह 16 साल की अवधि आपके लिए उतार-चढ़ाव से युक्त होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु की दृष्टि द्वादश भाव से षष्ठ भाव अर्थात शत्रु भाव या रोग भाव पर होने के फलस्वरूप आपको न तो कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या होने की संभावना है और न ही कोई बड़ी दुर्घटना जो आपको शारीरिक क्षति पहुँचा सके। आपका जीवन नियमित रहेगा।

अर्थ संपत्ति :

गुरु की अष्टम भाव अर्थात अचानक उन्नति के भाव और मांगलिक कार्य के भाव (चतुर्थ और षष्ठ भावों के अतिरिक्त) तथा चतुर्थ भाव अर्थात् सुख स्थान पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको चल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आप भोग-विलास की वस्तुओं पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव को शक्तिशाली बना रहा है। यह हानि और खर्च तथा अलगाव आदि का भाव है। इसके फलस्वरूप आप जो भी व्यवसाय शुरू करेंगे आपको एक या अनेक कठिनाइयों या समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपको अंतिम कदम सावधानीपूर्वक लेने की सलाह दी जाती है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण होगा तथा आपके जीवन साथी आपके साथ पूर्ण सहयोग करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे। परिवार में कुछ उदासी हो सकती है। आप अपने सुखी परिवार का आनन्द उठाएँगे।

Mr.

महादशा :- गुरु
(13/01/2016 - 13/01/2032)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 13/01/2016 को आरम्भ और 13/01/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरु करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी।

दशा विश्लेषण

Ms.

महादशा :- शनि
(29/09/2027 - 29/09/2046)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 29/09/2027 को आरम्भ और 29/09/2046 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है, किन्तु परिश्रम के फल से वंचित नहीं करता। यह जातकों की परीक्षा लेता है और उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में पंचम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 7वें 12वें और दूसरे भाव पर है ओर यह उनके कार्यों को प्रभावित कर रहा है। पंचम भाव सन्तान, सुख, कलात्मक प्रतिभा, प्रतिस्पर्धी गतिविधियाँ, बुद्धि, विशाल सम्पत्ति और आध्यात्मिक कार्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 5वें भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। आप को सामान्यतया कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

पंचम भाव में स्थित शनि भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिससे आपको आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के अनेक अवसर मिलेंगे। लॉटरी या प्रतियोगिता में विजय से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। किन्तु, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा संग्रह में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

व्यवसाय :

आप जो भी व्यवसाय, व्यापार या सेवा अपनाएं उसमें विशेषज्ञ होंगे। शासन के लोगों से आपकी दोस्ती होगी और आप मन्त्रशास्त्र के ज्ञाता होंगे। आप किसी संस्था के प्रधान हो सकते हैं ओर आप गणित आदि शास्त्र के विद्वान् भी हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन मधुर होगा और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपका स्वभाव दम्मी होगा और आपके पड़ोसियों तथा संबंधियों से आपका संबंध मधुर नहीं रहेगा जिससे आपका घरेलू जीवन दुःखी होगा। अन्यथा जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे और आपका भाग्य भी परिवर्तनशील रहेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा के लिए समय पूरी तरह अनुकूल है। आप गणित के विद्वान् हो सकते हैं।

Mr.

महादशा :- शनि
(13/01/2032 - 13/01/2051)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 13/01/2032 को आरम्भ और 13/01/2051 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादूर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।

दशा विश्लेषण

Ms.

महादशा :- बुध
(29/09/2046 - 29/09/2063)

बुध की महादशा 29/09/2046 को आरम्भ और 17 वर्ष की होकर 29/09/2063 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पंचम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, सफलता, उत्तम शिक्षा और धन की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी, सट्टे में लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, आशावादी तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको अक्सर पाचन क्रिया की शिकायत हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक समस्या हो सकती है। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। सतर्कता बरतकर इन मामूली बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। आपको अचानक लाभ या अवकाश ग्रहणसे लाभ, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति होगी। आपका निवेश शुभदायक और आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। कुछ मामूली नुकसान भी हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तर तथा परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। वाणिज्य-व्यापार से सम्बद्ध सभी कार्यों में आप अच्छा करेंगं। सहकर्मियों तथा सहायकों के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के कार्य में परिवर्तन होगा। आप आपने कार्य में परिवर्तन या अन्य आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं जो अन्ततः लाभदायक होंगे। आपका उपार्जन तथा लाभ अच्छा होगा। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग तथा बौद्धिक कार्य कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यपार लाभदायक हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

पारिवारिक सुख और वाहन की दृष्टि से यह दशा आपके लिये उत्तम होगी। आपको जमीन-जायदाद या ऐसी अन्य सम्पत्ति से लाभ होगा। आपको यातायात से भी लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में आप की छोटी और शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आप की शिक्षा अति उत्तम होगी। आपका प्रशिक्षण अच्छा होगा

और आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफल होंगे। आपकी लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक सेवा आदि में रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपको रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक होगा और सभी बौद्धिक कार्यों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा और उनसे आपको सुख मिलेगा। वे आप से दूर जा सकते हैं या उन्हें कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं जो दशा की उन्नति के साथ गुजर जाएंगी। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, उन्हें सुख की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिये यह दशा लाभदायक होगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनका भाग्यादेय और यात्रा होगी तथा बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कठिन परिश्रम करना होगा, उनकी छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियाँ से सहायता मिलेगी जबकि आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी शादी होगी और वाणिज्य व्यापार में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ संबंध अच्छा रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा, आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी तथा अच्छे पद की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर दशा के कारण आपको सम्पत्ति तथा सुख मिलेगा और शिक्षा उत्तम होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा विवाह हो सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा ननिहाल से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा छोटी यात्रा होगी। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा में यशा, ख्याति और सफलता मिलेगी।

Mr.

महादशा :- बुध
(13/01/2051 - 13/01/2068)

बुध की महादशा 13/01/2051 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 13/01/2068 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध तृतीय भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान कुछ मामूली वाधाओं को छोड़ जीविका में प्रगति तथा धन की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा के दौरान आपकी छोटी यात्राएं होंगी तथा पराक्रम और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचुर मात्रा में होगी। फिर भी आप सतर्क होंगे और जरुरत से अधिक परिश्रम नहीं करेंगे। गले की समस्या, ब्रोंकाइटिस, स्नायविक समस्या तथा गठिया आदि बीमारियों को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु, आवश्यक उपाय कर इन व्याधियों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपको आर्थिक सफलता मिलेगी और आपको किसी लाभदायक सरकारी पद की प्राप्ति हो सकती है। आपको अपने शत्रुओं तथा विरोधियों से लाभ मिलेगा और मुकदमों में विजय मिलेगी। आपको संचार-माध्यमों के क्षेत्र में लाभ मिलेगा। जीविका-व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, सेल्समैन, शिक्षण, ट्रेवेल एजेण्ट, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैमानिकी, चिकित्सक तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर, इस्तनिर्भित आदि वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा आप अपनी बौद्धिक उपलब्धि, समस्या-समाधान की क्षमता तथा कठिन परिश्रम के कारण पुरस्कृत किए जाएंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, आय और लाभ में वृद्धि होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। कार्यों में सफलता और विरोधियों पर विजय के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति भी हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आप अपना पुराना वाहन बेच सकते हैं। बुध की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे जबकि बुध की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली नुकसान हो सकता है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उस दशा में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा के माध्यम से आपको कुछ आर्थिक लाभ होगा। गणित, विज्ञान, विधि, ललितकला, संचार-माध्यम, पत्रकारिता, लेखन तथा साहित्य में आपकी रुचि हो सकती है। आप हस्तकला तथा वाकपटुता में कुशल होंगे।। आप तेज, कूटनीतिक, बहुमुखी एवं विज्ञान में रुचि रखने वाले हैं।

परिवार :

आपके बच्चों के लिये समय समृद्धि-दायक रहेगा और उनके लाभ तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की यात्रा होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा तथा उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपकी माता की कुछ यात्रा, व्यय तथा स्वास्थ्य संबंधी

मामूली समस्या होगी जबकि आपके पिता को व्यापार में तथा साझेदार से लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को यश और ख्याति मिलेगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि बड़ों को सट्टे में सफलता तथा लाभ मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। आप सामाजिक व लोकप्रिय होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपको संचार-माध्यम से लाभ और भाइयों से सुख मिलेगा जबकि केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यापार में लाभ और विवाद होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण सट्टे से लाभ तथा बच्चों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आराम मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यात्रा होगी और समृद्धि की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी तथा लाभ मिलेगा।

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2025

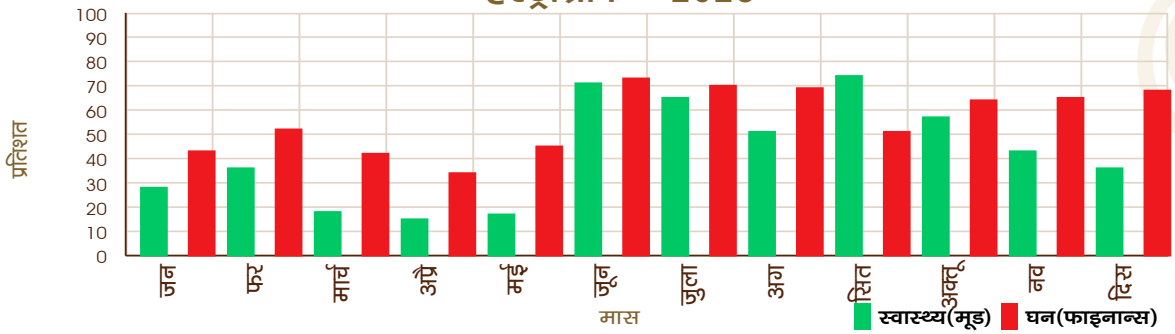

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2025

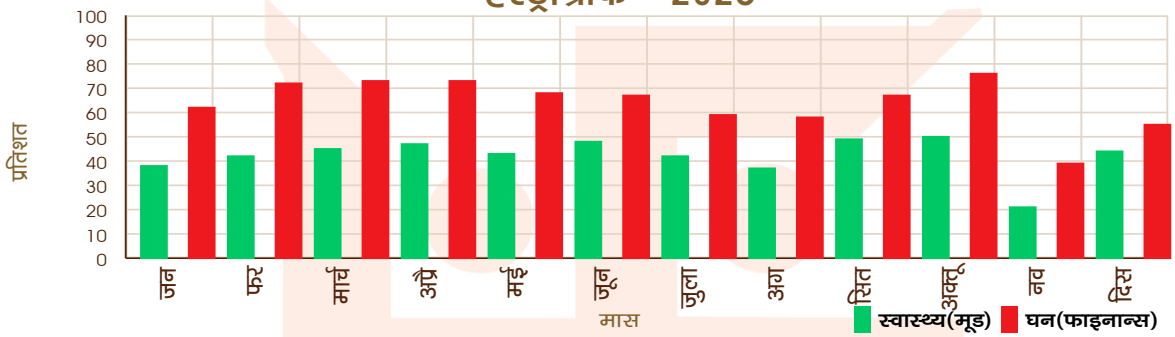

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2026

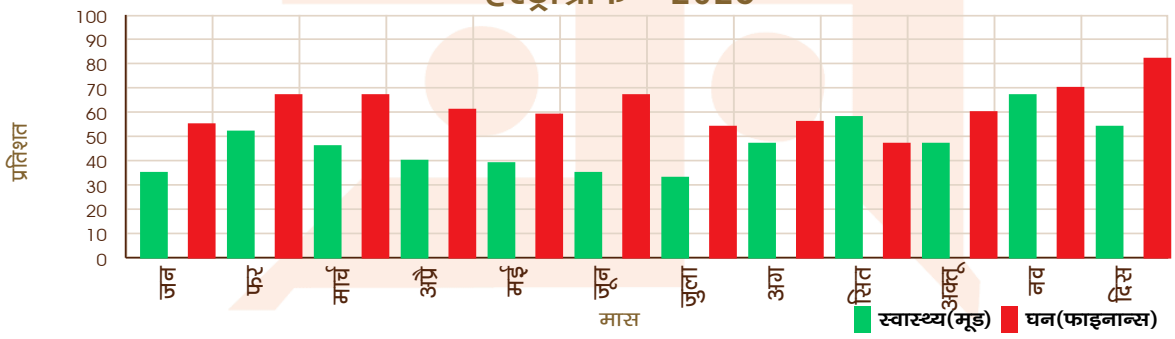

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2026

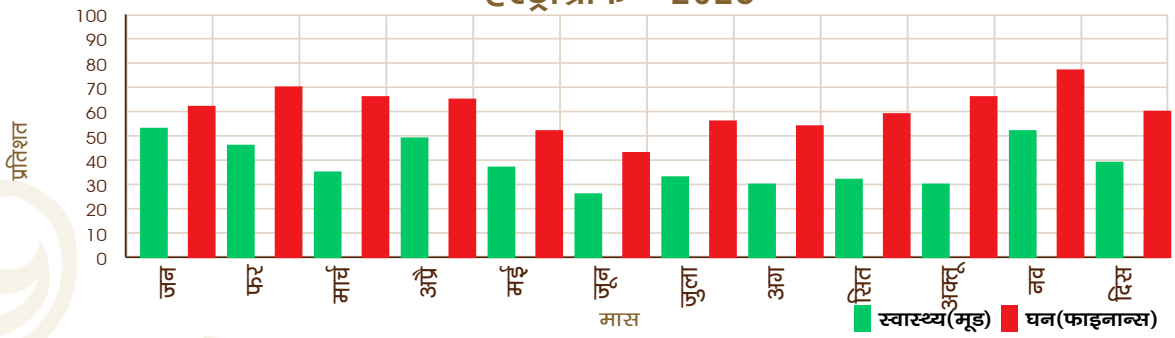

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2027

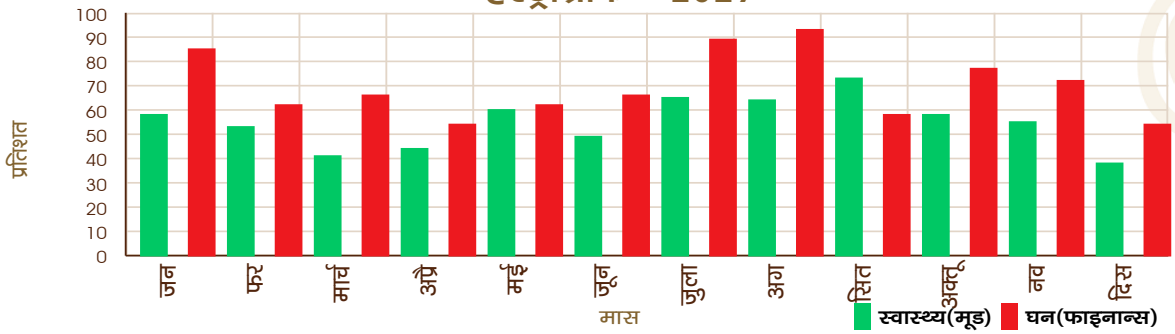

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2027

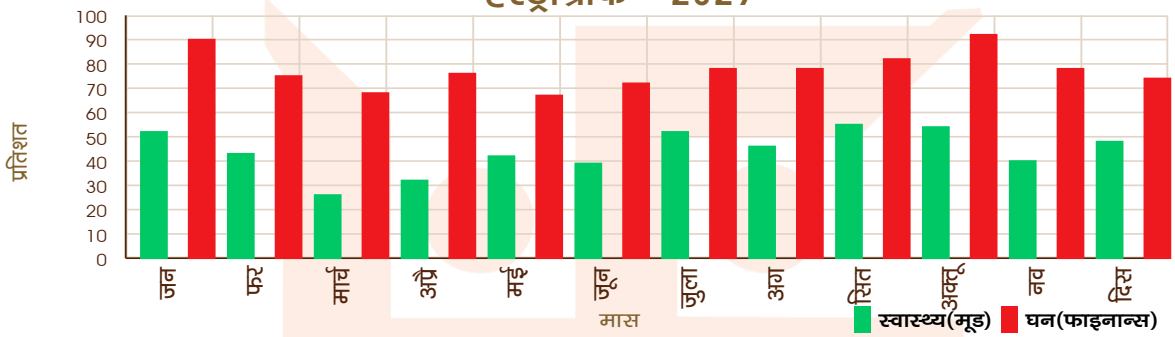

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2028

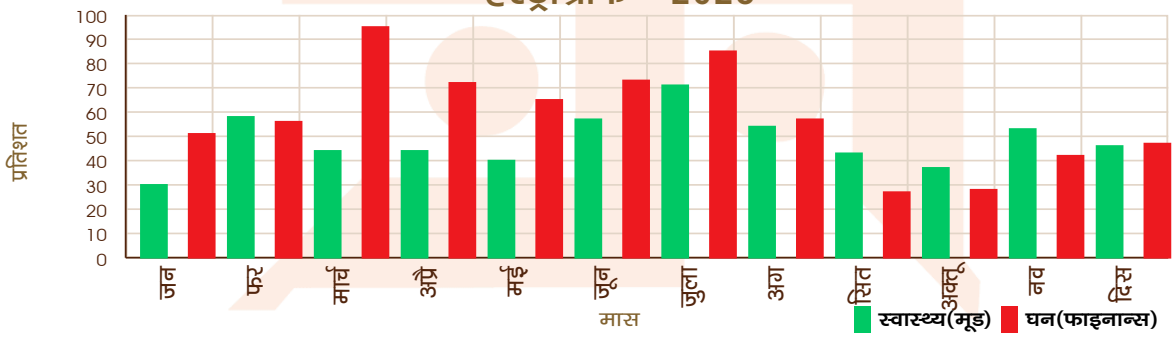

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2028

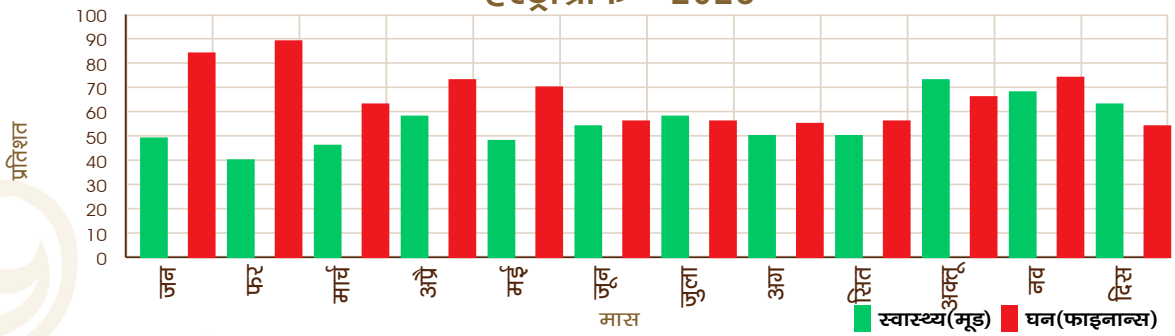

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2029

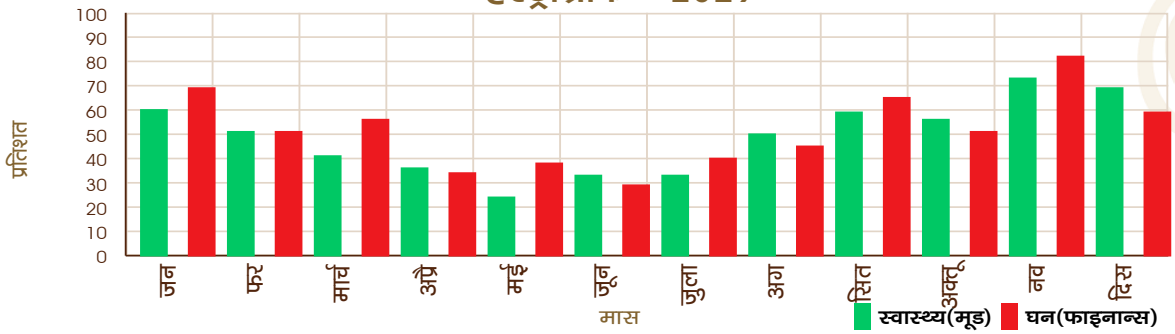

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2029

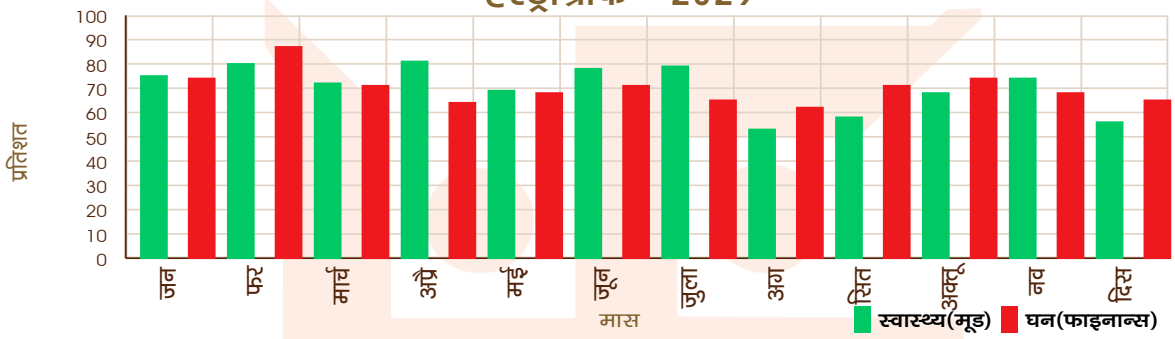

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2030

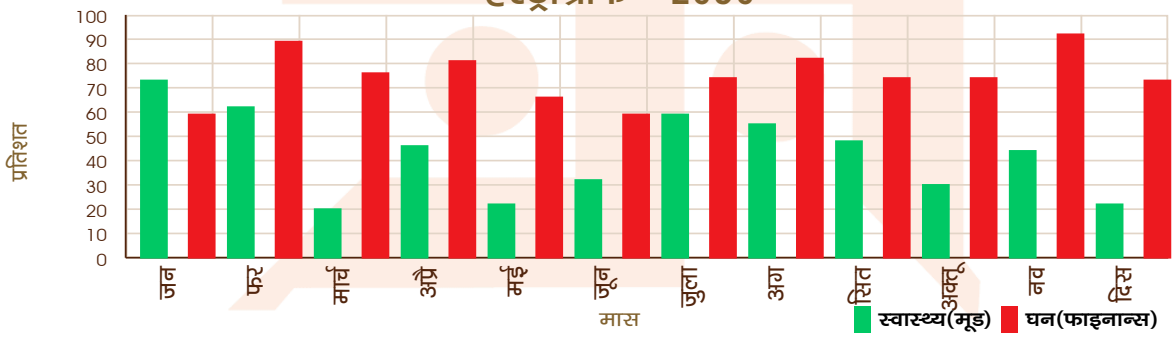

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2030

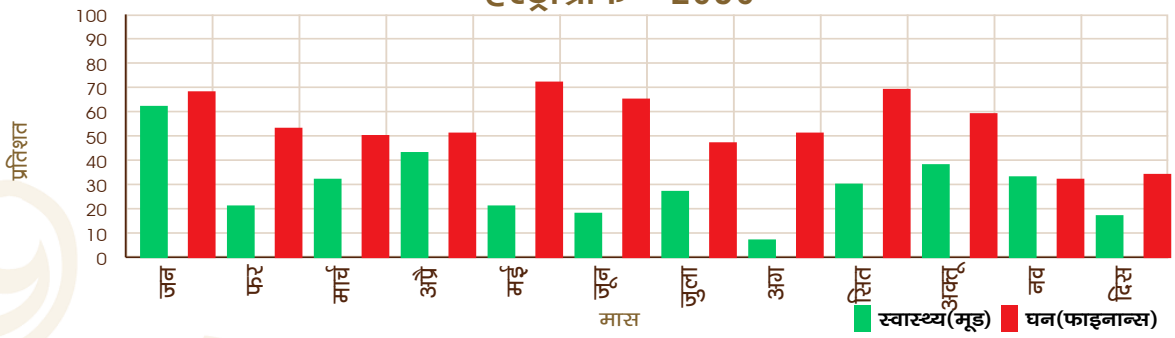

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2031

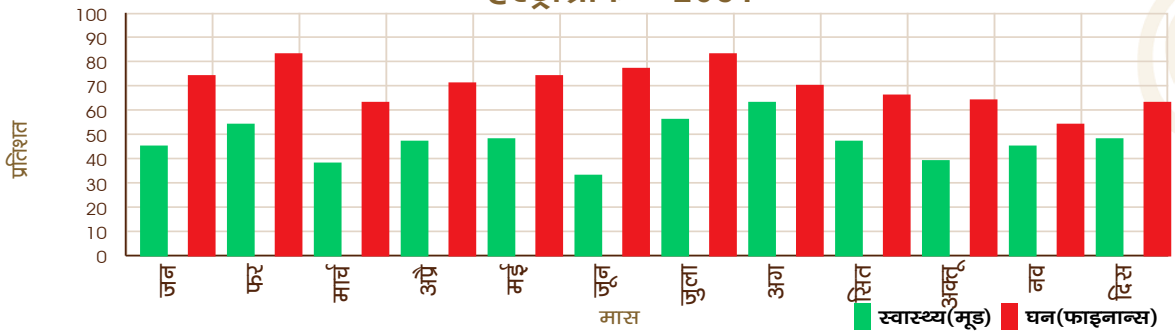

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2031

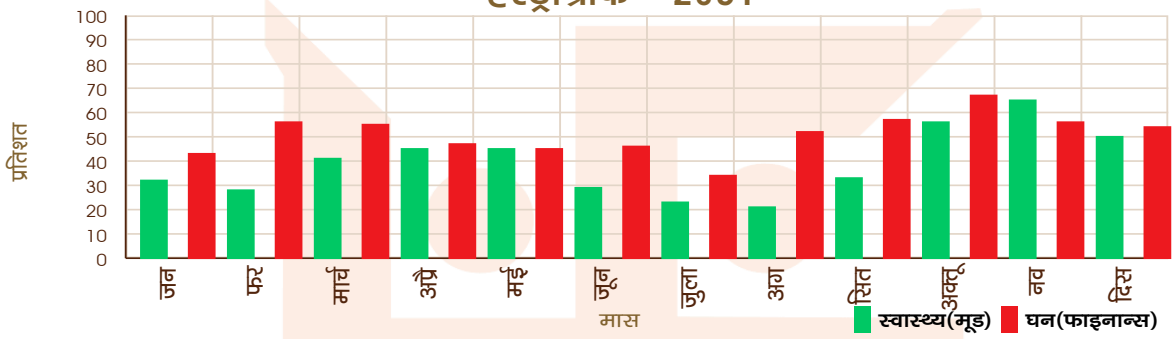

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2032

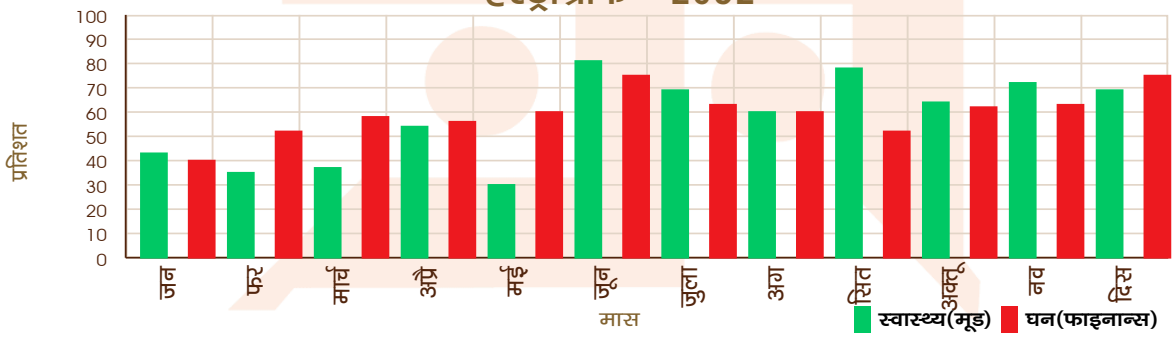

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2032

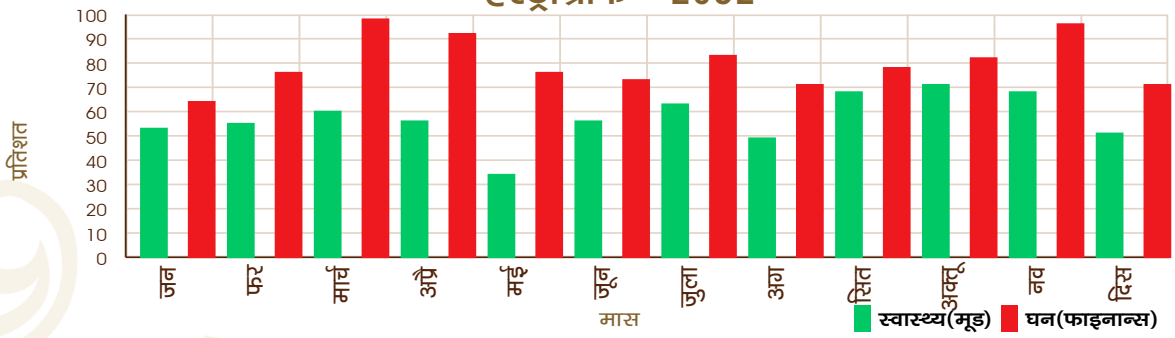

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2033

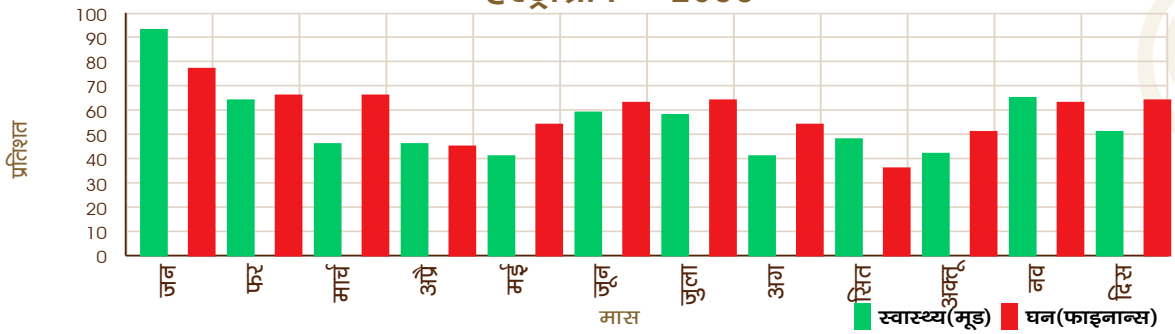

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2033

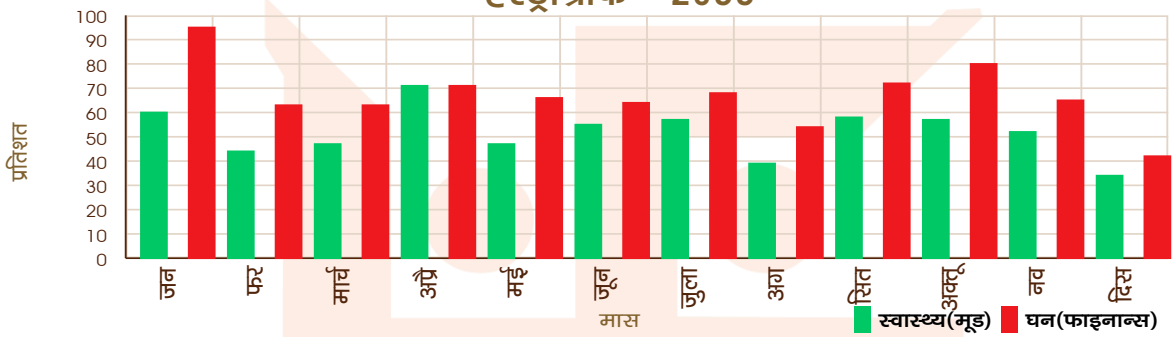

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2034

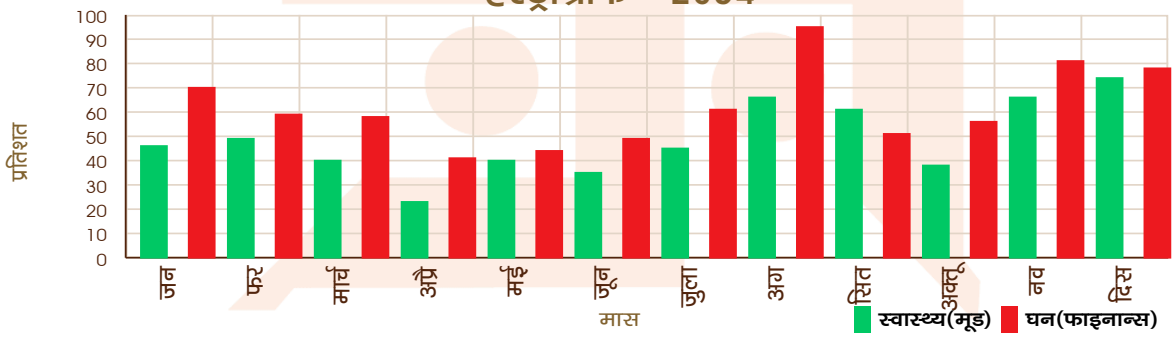

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2034

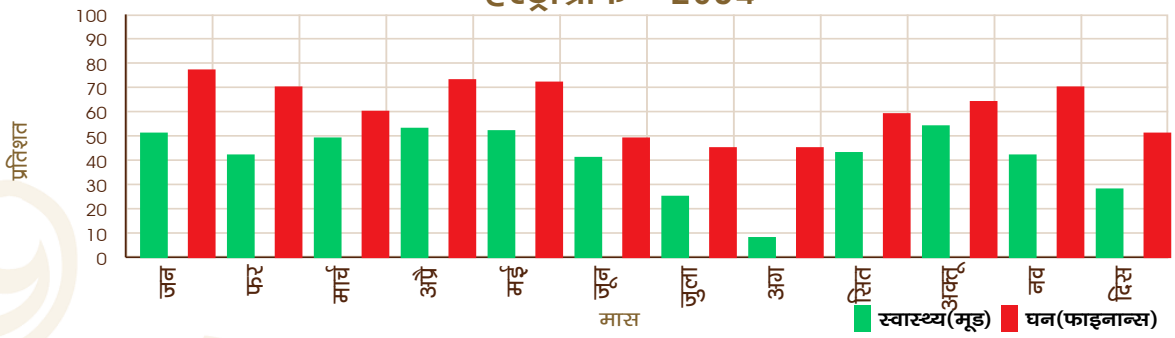

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2035

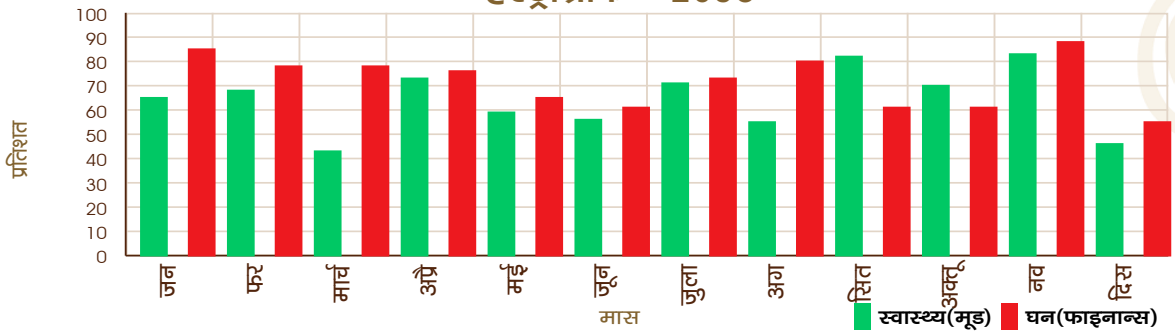

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2035

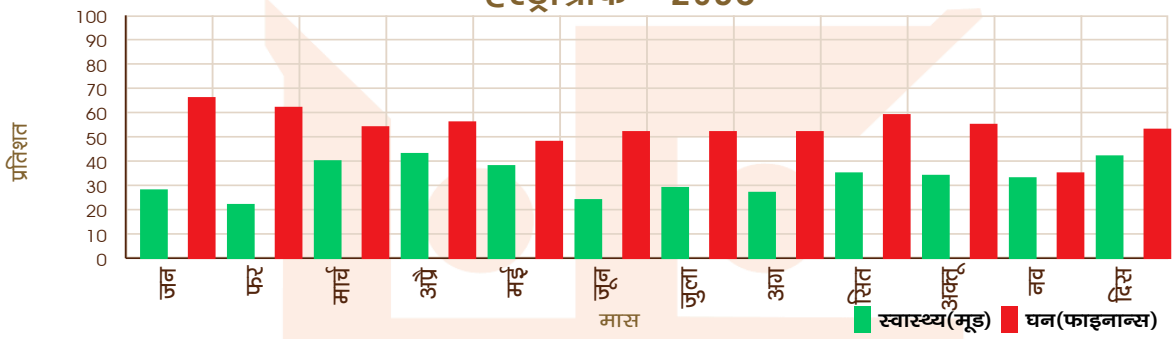

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2036

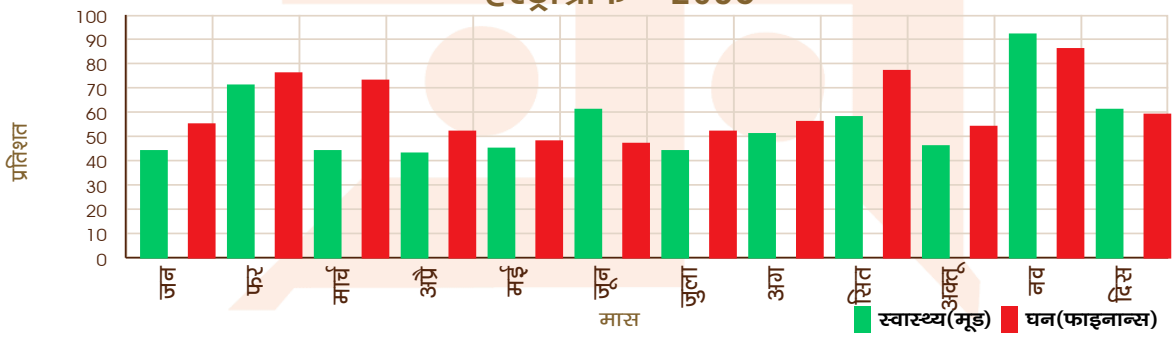

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2036

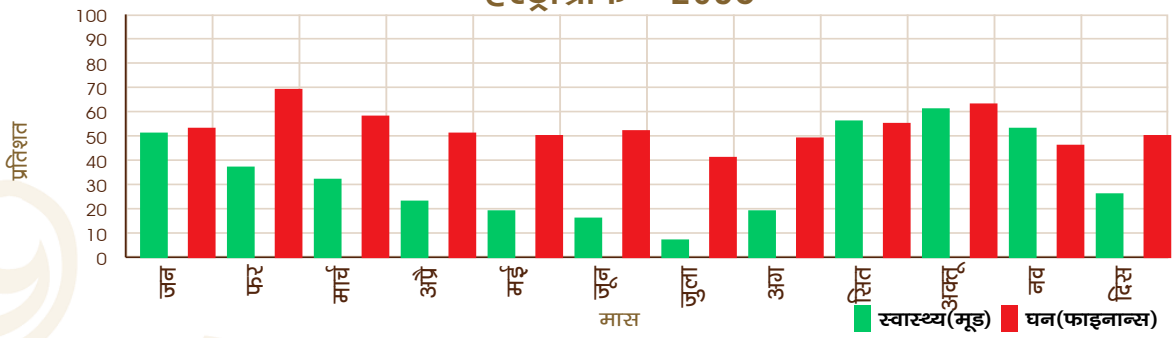

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com